



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

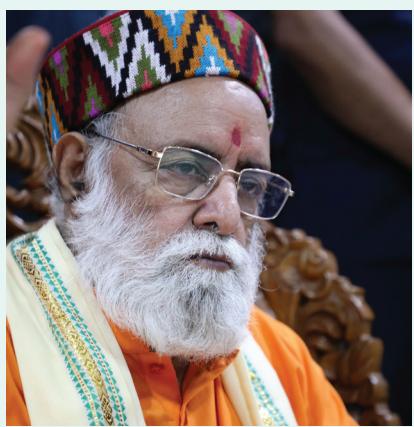
भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 15 सितंबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 08 ● मूल्य: 5 रुपए



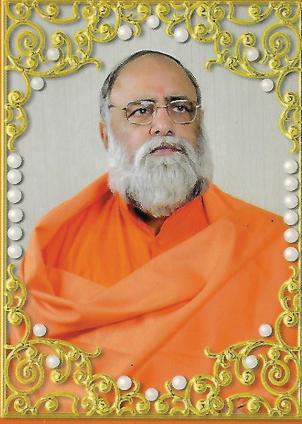
संसद भंग, कार्की की एंट्री...



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का निवारण करते हुए कहा कि पाठ को कभी न छोड़ें और हर स्थिति में पाठ करें।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्तिनहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

@ भारतश्री ब्लूरो

भारत और पाकिस्तान का क्रिकेट मुकाबला केवल एक खेल नहीं होता, यह करोड़ों लोगों की भावनाओं का मामला होता है। 2025 एशिया कप में दोनों टीमें आमने-सामने आईं। हालाँकि मैच शुरू होने से पहले ही इसका विरोध भारत में कई जगहों पर हो रहा था। वजह साफ़ थी—इसी साल अप्रैल में जमू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकियों ने 26 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी थी। उस घटना ने पूरे देश को हिला दिया था। इसके बाद भारत ने “ऑपरेशन सिंदूर” चलाया था और दोनों देशों के बीच हालात युद्ध जैसे बन गए थे ऐसे तनावपूर्ण हालात के बीच यह क्रिकेट मैच खेला गया। और जब मैदान पर नतीजा आया, तो भारतीय टीम ने पूरे देश को गर्व महसूस कराने वाला प्रदर्शन किया।

पाकिस्तान की बल्लेबाजी लड़खड़ाई, भारत का दबदबा

तांस जीतकर पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी का फ़ैसला किया। लेकिन भारतीय गेंदबाजों की धार के सामने उनकी एक न चली। शुरूआत से ही विकेट गिरते रहे और पूरी टीम 20 ओवर में 9 विकेट खोकर सिर्फ़ 127 रन बना सकी। भारत की ओर से गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। तेज़ गेंदबाजों ने पावरप्ले में ही पाकिस्तान की कमर तोड़ दी, वहीं स्पिनरों ने बीच के ओवरों में दबाव बनाए रखा।

कप्तान सूर्या ने दिखाई दिलास

128 रन का लक्ष्य भारत जैसी मजबूत टीम के लिए बहुत बड़ा नहीं था। लेकिन पाकिस्तान की गेंदबाजी हमेशा से चुनौतीपूर्ण मानी जाती है। भारतीय बल्लेबाजों ने शुरूआत से ही सावधानी और आक्रामकता का संतुलन बनाए रखा। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने जिम्मेदारी उठाई और धैर्य के साथ पारी को आगे बढ़ाया। उन्होंने न सिर्फ़ टीम को जीत की ओर ले जाया, बल्कि अंत तक मैदान पर खड़े रहकर छक्के के साथ मैच खत्म किया। सूर्या ने सबसे ज्यादा 47 रन बनाए और अपनी कप्तानी का लोहा मनवाया। भारत ने यह लक्ष्य सिर्फ़ 16वें ओवर में 3 विकेट खोकर हासिल कर लिया। यह एकतरफा जीत साबित हुई जिसने भारतीय प्रशंसकों के चेहरे पर मुस्कान ला दी।

सूर्यकुमार यादव का बयान बना खास पल

मैच के बाद पोस्ट-मैच प्रेजेंटेशन में कप्तान सूर्या ने जो कहा, उसने हर भारतीय का दिल छू लिया। उन्होंने कहा, “बस कुछ कहना चाहता था। यह बिल्कुल



सही मौका है। हम पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों के परिवारों के साथ खड़े हैं। हम अपनी एकजुटता व्यक्त करते हैं।” सूर्या यहीं नहीं रुके। उन्होंने आगे कहा, “इस जीत को हम अपने सभी सशस्त्र बलों को समर्पित करना चाहते हैं, जिहोंने अदम्य साहस दिखाया है। वे हमें हमेशा प्रेरित करते हैं और जब भी हमें मौका मिलता है, हम उन्हें मैदान पर मुस्कुराने का कारण देना चाहते हैं।” यह बयान सुनकर दर्शकों और क्रिकेट फैंस ने सोशल मीडिया पर उनकी जमकर तारीफ की।

सूर्यों का जन्मदिन, देश को मिला खास तोहफा

इस मैच के दिन कप्तान सूर्यकुमार यादव का जन्मदिन भी था। जब उनसे इस बारे में पूछा गया, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “यह जीत मेरे लिए सुखद अहसास है। यह मेरी तरफ से भारत को बेहतरीन ‘रिटर्न गिफ्ट’ है। मैं हमेशा कोशिश करता हूं कि अंत तक क्रीज पर खड़ा रहूं और आज मैच फिनिश करके खुश हूं।” सूर्या ने छक्के के साथ मैच खत्म किया और जन्मदिन को यादगार बना दिया। उनके इस अंदाज़ ने भारतीय फैंस को

एम.एस. धोनी की याद दिला दी।

भारत-पाकिस्तान मैच हमेशा भावनाओं से भरा होता है, लेकिन इस बार स्थिति और संवेदनशील थी। अप्रैल की दर्दनाक घटना के बाद लोगों में गुस्सा और आक्रोश था। ऐसे में जब भारतीय कप्तान ने जीत को समर्पित किया, तो इसने पूरे देश को एकजुट कर दिया।

एशिया कप में भारत का जलवा

इस जीत के साथ भारत ने एशिया कप 2025 में शानदार शुरूआत की है। पाकिस्तान जैसी मजबूत टीम को हराने के बाद अब बाकी टीमों पर मनोवैज्ञानिक दबाव लग रहा है। बल्कि गेंदबाजी भी अब धारदार नज़र आ रही है। क्रिकेट विशेषज्ञों का कहना है कि अगर भारतीय टीम इसी लय में खेलती रही, तो एशिया कप का खिताब फिर से भारत के नाम होगा। यह मैच केवल स्कोरकार्ड या रन-रेट तक सीमित नहीं रहा। यह भावनाओं, संवेदनाओं और देशभक्ति का मेल था। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने बल्ले से तो चमक बिखेरी ही, साथ ही अपने बयान से हर भारतीय के दिल को जीत लिया।



ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



भारत के चीनी सेक्टर में खुशी की लहर

अक्टूबर से एक्सपोर्ट की तैयारी, एथनॉल भी रिकॉर्ड स्तर पर

भा

रत जल्द ही चीनी का एक्सपोर्ट फिर से शुरू करने की तैयारी में है, क्योंकि नई सीज़न में उत्पादन अच्छा रहने का अनुमान है और स्टॉक भी ठीक-ठाक है, जिससे घरेलू ज़रूरतें और एथनॉल योजना—दोनों साथ चल सकेंगी। सरकारी अफसरों ने इशारा दिया है कि अक्टूबर से शुरू होने वाले नए मार्केटिंग ईयर में एक्सपोर्ट की गुंजाइश बनेगी, जबकि एथनॉल मिलाने का लक्ष्य भी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

क्याबड़ी खबर है

सरकार के एक वरिष्ठ अफसर ने बताया कि नई सीज़न में चीनी का उत्पादन अच्छा दिख रहा है, इसलिए एक्सपोर्ट का रास्ता खुल सकता है, हालांकि मात्रा अभी तय नहीं की गई है।

इंडियन शुगर एंड बायो-एनर्जी मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (ISMA) का अनुमान है कि 2025-26 में चीनी उत्पादन करीब 34.9 मिलियन टन तक जा सकता है, जो पिछले साल से काफ़ी ज्यादा है।

महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में फसल हालत बेहतर हैं, इसलिए उत्पादन बढ़ने की उम्मीद है; उदाहरण के लिए महाराष्ट्र का अनुमान 13.26 मिलियन टन के लिए अधिक है।

मौजूदा साल में 1 मिलियन टन एक्सपोर्ट की इजाजत थी, नए साल में इंडस्ट्री ने 2 मिलियन टन एक्सपोर्ट की मांग रखी है।

क्यों बढ़ेगा उत्पादन

बारिश ठीक रहने, खेतों में गन्ने की बोवाई बढ़ने और पैदावार सुधरने से कुल चीनी उत्पादन में उछाल का अनुमान लगाया जा रहा है, जिससे मार्केट में सप्लाई मजबूत हो सकती है। ISMA ने सैटेलाइट इमेज और ज़मीनी रिपोर्ट के आधार पर अपना अनुमान दोहराया है कि 2025-26 में उत्पादन 34.9 मिलियन टन के आस-पास रह सकता है, जिसे “18% तक बढ़त” की तरह देखा जा रहा है। बड़े राज्यों में बारिश और बांधों के जल-स्तर बेहतर रहने से फसल की हालत पिछले साल से अच्छी बताई जा रही है, जिससे मिलों को पेराई सीज़न में ज्यादा गन्ना मिलने की उम्मीद है।

महाराष्ट्र और कर्नाटक में अगस्त की बारिश ने फसल को सहारा दिया, जिससे खेतों में गन्ने की बढ़त सामान्य से बेहतर है।

उत्तर प्रदेश में नई किस्में, समय पर खेती के उपाय और कम रोग-प्रकोप जैसी बातें पैदावार बढ़ने में मदद कर सकती हैं, ऐसा इंडस्ट्री का आकलन है।

एथनॉल योजना: साथ-साथ करें चलेंगा

भारत ने 2025-26 तक पेट्रोल में 20% एथनॉल मिलाने का लक्ष्य रखा है, और इसके लिए सरकार ने 2025-26 एथनॉल सप्लाई ईयर से गन्ने के रस, सिरप और हर तरह की शीरे से एथनॉल बनाने पर मात्रा बाली पार्बंदियां हटा दी हैं। इसका मतलब यह है कि मिले ज़रूरत के हिसाब से एथनॉल बना सकेंगी, लेकिन सरकार समय-समय पर निगरानी भी करेगी ताकि साल भर चीनी की घरेलू सप्लाई बनी रहे। नई सीज़न में गन्ने-आधारित



फिडस्टॉक से एथनॉल का रिकॉर्ड 4.8 बिलियन लीटर तक बनने का अनुमान जताया गया है, जो एथनॉल मिलाने के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

रिपोर्टर्स के अनुसार, एथनॉल के लिए चीनी का डाइवर्ज़न अगले साल लगभग 5 मिलियन टन चीनी समकक्ष तक जा सकता है, जो पिछले साल से ज्यादा है।

सरकार और पेट्रोलियम मंत्रालय मिलकर डाइवर्ज़न की निगरानी करेंगे ताकि त्योहारी सीज़न और बाकी महीनों में देश के लिए पर्याप्त चीनी रहे।

मार्केट पर क्या असर पड़ेगा

दुनियाभर के बाजारों में यह बात पहुँचते ही चीनी प्लूचर्स पर दबाव दिख सकता है, क्योंकि भारत दुनिया के बड़े प्रोड्यूसर में से है और एक्सपोर्ट बढ़ने से ग्लोबल सप्लाई सुधरती है। सरकार के लिए भी यह कदम घरेलू दामों को स्थिर रखने और किसानों को गन्ने का तय न्यूनतम दाम दिलाने में मददगार माना जा रहा है, क्योंकि मिलों की नकदी स्थिति बेहतर बनती है तो किसानों को भुगतान समय पर हो पाता है। नए मार्केटिंग ईयर की शुरुआत में देश के पास लगभग 5 मिलियन टन का कैरीओवर स्टॉक रहने का अनुमान है, जो सप्लाई बैलेंस में काम आएगा।

ISMA और इंडस्ट्री के कई विशेषज्ञ मानते हैं कि 2 मिलियन टन तक एक्सपोर्ट की अनुमति मिलनी चाहिए, ताकि मिलों घरेलू ज़रूरतें पूरी करके बाकी चीनी बाहर बेच सकें।

घरेलू खपत भी धीरे-धीरे बढ़कर लगभग 28.5-29 मिलियन टन तक पहुँचने की उम्मीद है, इसलिए स्टॉक और उत्पादन—दोनों का हिसाब मिलाकर ही एक्सपोर्ट तय होगा।

किसानों, मिलों और उपभोक्ताओं के लिए दृष्टकोण

इस धूपी तस्वीर में सबसे अहम है बैलेंस—यानी इतनी चीनी रहे कि घर-घर की ज़रूरत और त्योहारों का



सीज़न आराम से निकल जाए, और साथ ही एथनॉल प्लान भी तेज़ी से चले। सरकार ने एथनॉल पर पाबंदी हटाकर मिलों को ब्रीथिंग स्पेस दी है, ताकि वे एथनॉल और चीनी—दोनों के हिसाब से अपनी प्लानिंग कर सकें और कैश-फ्लो बेहतर रख सकें, जिससे किसानों का भुगतान दुरुस्त रहे। दूसरी तरफ, एक्सपोर्ट की इजाजत मिलने से मिलों को बेहतर दाम मिल सकते हैं, और अगर ग्लोबल दाम नरम होते हैं तो घरेलू दाम स्थिर रखने में भी सहायिता रहती है।

किसान: समय पर भुगतान मिलना सबसे बड़ा फायदा है, जो मिलों की बिक्री और एथनॉल रेवन्यू पर निर्भर करता है; एथनॉल का रास्ता खुलने से भुगतान चक्र मजबूत हो सकता है।

मिलों: उत्पादन बढ़े, एथनॉल क्षमता चले और एक्सपोर्ट विंडो खुले—तो प्लाट की उपयोगिता बढ़ती है और घाटा कम होता है, ऐसा इंडस्ट्री का सामान्य अनुभव रहा है।

उपभोक्ता: घरेलू सप्लाई ठीक रही तो दाम स्थिर रहने की संभावना रहती है, जिससे त्योहारों में अचानक महंगाई का दबाव कम पड़ता है।

अलग-अलग राय: क्या-क्या कहा जा रहा है

इंडस्ट्री बॉडी का कहना है कि 2 मिलियन टन

एक्सपोर्ट की समय पर मंजूरी मिलनी चाहिए, ताकि मिलों पहले से कॉन्ट्रैक्ट कर सकें और सीज़न की शुरुआत में कैश-फ्लो ठीक रहे। कुछ विशेषज्ञ यह भी कहते हैं कि एथनॉल के दाम और खरीद नीति को थोड़ा और बेहतर बनाया जाए, ताकि मिलों किसानों के सरकार द्वारा तय गन्ने का दाम समय पर दे सकें। वहाँ नीति बनाने वाले विभाग कहते हैं कि एथनॉल डाइवर्ज़न और चीनी सप्लाई का संतुलन लगातार मॉनिटर किया जाएगा, ताकि देश में कमी की स्थिति न आए और साल भर सप्लाई स्मूथ रहे।

कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर मॉनिटर में कोई बड़ी गड़बड़ी नहीं आई और फसल सुरक्षित रही, तो उत्पादन अनुमान हासिल किया जा सकता है; वरना आंकड़ों में थोड़ा-बहुत बदलाव हो सकता है।

बाजार पक्ष कहता है कि भारत के एक्सपोर्ट वापस आने से ग्लोबल दामों पर नरमी आ सकती है, जो इम्पोर्ट करने वाले देशों के लिए राहत है, लेकिन मिलों को एक्सपोर्ट प्राइस और घरेलू दाम—दोनों का सही मिलान देखना होगा।

आगे क्या हो सकता है

अक्टूबर से नया मार्केटिंग ईयर शुरू होगा, और उसी समय एक्सपोर्ट पर पॉलिसी साफ होने की उम्मीद है, क्योंकि सरकार को त्योहारी सीज़न की घरेलू मांग भी देखनी होती है।

अगर ISMA का 34.9 मिलियन टन वाला अनुमान सही बैठा और एथनॉल के लिए लगभग 5 मिलियन टन चीनी-एक्विवलेंट डाइवर्ज़न हुआ, तो भी 28.5-29 मिलियन टन की घरेलू खपत को कवर करना संभव दिखता है, जिससे सीमित एक्सपोर्ट स्पेस बन सकता है। कैरीओवर स्टॉक लगभग 5 मिलियन टन रहने से शुरुआती महीनों में सप्लाई हँगओवर रहेगा, जो मार्केट स्थिर रखने में काम आता है।

नीति अपेटेट: एथनॉल उत्पादन पर पाबंदियां हटाने की सूचना लागू होते ही मिलों अपनी ब्लैंडिंग डिलीवरी प्लान बढ़ा सकती हैं, और सरकार समय-समय पर डाइवर्ज़न का विवृ करेगी।

एक्सपोर्ट विंडो: इंडस्ट्री 2 मिलियन टन एक्सपोर्ट की मांग कर रही है; अंतिम मंजूरी और टाइमिंग से ही ट्रेडिंग प्लान साफ होंगे।

आसान भाषा में निचोड़

कुल मिलाकर तस्वीर यह है: नई फसल ठीक है, चीनी ज़्यादा बनेगी, एथनॉल का काम भी तेज़ चलेगा, और इसी के साथ थोड़ा-बहुत एक्सपोर्ट भी संभव दिख रहा है—पर सब कुछ बैलेंस पर टिका है, यानी देश में चीनी कम न पड़े और मिलों-किसानों की कमाई भी चलती रहे। सरकार ने एथनॉल वाले नियम हल्के कर दिए हैं, जिससे रिकॉर्ड 4.8 बिलियन लीटर एथनॉल बनने की उम्मीद है, और साथ में एक्सपोर्ट पर भी पॉजिटिव संकेत दिए हैं, जिससे ग्लोबल मार्केट में सप्लाई बढ़ सकती है और दामों पर दबाव आ सकता है। आने वाले हफ्तों में एक्सपोर्ट की स्टोक मात्रा, त्योहारी मांग, और एथनॉल डिलीवरी—ये तीन बातें तय करेंगी कि मिलों कितना बेचेंगी और बाजार किस तरफ जाएगा।

नेपाल की पहली अंतरिम महिला प्रधानमंत्री सुशीला कार्की पदभार ग्रहण करते ही शहीदों के परिवारों के लिए बड़ा ऐलान

@ आनंद मीणा

नेपाल की राजनीति इन दिनों एक नए मोड़ पर है। पूर्व मुख्य न्यायाधीश और अब अंतरिम प्रधानमंत्री बनीं सुशीला कार्की ने रविवार को औपचारिक रूप से कार्यभार संभाल लिया। पदभार ग्रहण करते ही उन्होंने वह फैसला लिया जिसने जनता के दिलों में उनके लिए सम्मान और उम्मीद दोनों जगा दी। उन्होंने हाल ही में हुए जेन-जी आंदोलन के दौरान मारे गए लोगों को 'शहीद' का दर्जा देने और उनके परिवारों को 10-10 लाख रुपए मुआवजा देने की घोषणा की। यह कदम नेपाल की राजनीति में एक अहम संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। सरकार अब जनता की आवाज़ को नज़रअंदाज़ नहीं करेगी।

जेन-जी आंदोलन और सुशीला कार्की की नियुक्ति

नेपाल में बीते कुछ हफ्तों से हालात बेहद तनावपूर्ण रहे। भ्रष्टाचार के खिलाफ नाराजगी, सोशल मीडिया पर प्रतिबंध और प्रशासनिक उदासीनता ने युवाओं को सड़कों पर ला खड़ा किया। इस आंदोलन को जेन-जी आंदोलन कहा गया क्योंकि इसमें ज्यादातर युवा वर्ग शामिल था। प्रदर्शनों के दौरान कई जगहों पर हिंसा, आगजनी और पुलिस के साथ झड़पें हुईं। इसमें दर्जनों लोग घायल हुए और कई की मौत भी हो गई। इन हालातों ने सरकार को झकझोर कर रख दिया। नतीज़ यह हुआ कि प्रधानमंत्री के इस्तीफे के बाद राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की को देश की अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलाई।

शपथ के बाद पहले कदम

सुशीला कार्की ने शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन में शपथ ली थी, लेकिन औपचारिक रूप से उन्होंने रविवार को कामकाज संभाला। अपने कार्यकाल की शुरुआत उन्होंने लैंचॉर स्थित शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित कर की। इसके बाद वे सिंह दरबार गईं, जहां से वे प्रधानमंत्री के रूप में अपना काम आगे बढ़ा रही हैं। दिलचस्प बात यह रही कि फिलहाल उनका आधिकारिक कार्यस्थल गृह मंत्रालय का भवन बना है। इसकी वजह यह है कि बोते मंगलवार को हुए हिंसक प्रदर्शनों और आगजनी में प्रधानमंत्री कार्यालय का मुख्य परिसर क्षतिग्रस्त हो गया था।

शहीद का दर्जा और मुआवजे का ऐलान

सुशीला कार्की ने कार्यभार संभालते ही सबसे पहले आंदोलन में मारे गए लोगों को सम्मान देने का फैसला लिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि "जो लोग लोकतांत्रिक अधिकारों और न्याय की आवाज उठाते हुए शहीद हुए, वे



देश की धरोहर हैं।" मुख्य सचिव एकनारायण आर्यल ने बताया कि सरकार ने आंदोलन में मारे गए हर नागरिक को 'शहीद' का दर्जा देने और उनके परिजनों को 10 लाख रुपए की आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, सरकार ने आंदोलन के दौरान घायल हुए 134 प्रदर्शनकारियों और 57 पुलिसकर्मियों के इलाज का खर्च भी उठाने का ऐलान किया है।

क्यों अहम है यह फैसला?

नेपाल के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में यह फैसला बेहद अहम है। आम तौर पर किसी भी आंदोलन में मारे गए लोगों को शहीद का दर्जा देने में लंबा समय लगता है और कई बार तो सरकारें टाल-मटील भी करती रहती हैं। लेकिन सुशीला कार्की ने पदभार संभालते ही यह कदम उठाकर साफ़ संदेश दिया कि उनकी प्राथमिकता जनता है। यह कदम न सिर्फ़ पीड़ित परिवारों को राहत देगा बल्कि यह भी दर्शाता है कि सरकार अब आंदोलन को दबाने के बजाय उसकी बजहों पर गंभीरता से विचार करेगी।

जनता की उम्मीदें और चुनौतियाँ

सुशीला कार्की नेपाल की पहली महिला अंतरिम प्रधानमंत्री बनी हैं। उनकी नियुक्ति अपने आप में ऐतिहासिक है, लेकिन उनके सामने चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। भ्रष्टाचार पर अंकुश आंदोलन की सबसे बड़ी वजह भ्रष्टाचार रहा है। अब जनता की उम्मीद है कि नई प्रधानमंत्री इस दिशा में ठोस कदम उठाएँगी सोशल मीडिया पर प्रतिबंध का सवाल, जिस फैसले ने आग में घी का काम किया, वह सोशल मीडिया बैन था। युवा वर्ग चाहता है कि इसे हटाया जाए और अधिव्यक्ति की आजादी को बहाल किया जाए। आर्थिक स्थिरता हिंसा और विरोध प्रदर्शनों से देश की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ा है। निवेशकों का भरोसा डगमगा गया है। इसे संभालना भी बड़ी चुनौती होगी। राजनीतिक अस्थिरता अंतरिम सरकार का कार्यकाल सीमित होता है, ऐसे में स्थायी समाधान निकालना और चुनाव की दिशा तय करना भी उनके एजेंडे में स्थान नहीं है। नेपाल की इस स्थिति पर पड़ोसी देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भी

नज़र है। दक्षिण एशिया में नेपाल की भूमिका अहम है और यहां राजनीतिक स्थिरता क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए भी ज़रूरी मानी जाती है। सुशीला कार्की का पहला कदम यह संकेत देता है कि उनकी सरकार लोगों के साथ खड़ी है और लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करेगी।

सुशीला कार्की कौन हैं?

सुशीला कार्की कोई साधारण नेता नहीं हैं। वे नेपाल की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश रह चुकी हैं और न्यायपालिका में उनकी छावि सख्त और ईमानदार रही है। उन्होंने कई अहम मामलों में पारदर्शिता और न्याय सुनिश्चित किया था। यही वजह है कि जब राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी तो राष्ट्रपति ने उन्हीं पर भरोसा जताया। हालांकि सुशीला कार्की की सरकार अंतरिम है, लेकिन उनकी नियुक्ति और शुरुआती फैसलों ने जनता को उम्मीद दी है। आंदोलन में मारे गए लोगों को 'शहीद' का दर्जा देना और परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

संसद भंग, कार्की की एंट्री नेपाल में नया दौर

यह नेपाल में एक बड़े बदलाव की कहानी है: पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की अब देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी हैं, और यह फैसला भारी हिंसा, आगजनी और "Gen Z" की बड़ी युवाओं की विरोध लहर के बाद लिया गया है।

क्या हुआ और क्यों हुआ

नेपाल में पिछले हफ्ते बड़े विरोध शुरू हुए, पहले वजह थी सरकार की तरफ से 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पाबंदी, पर बात सिर्फ यहीं तक नहीं रही और मामला सीधा भ्रष्टाचार के स्खिलफ युवा अंदोलन में बदल गया। पुलिस और सेना की सख्ती के बीच झड़पें हुईं, कई सरकारी दफ्तरों और नेताओं के घरों में आग लगा दी गई, संसद भवन तक में आगजनी हुई, और हालात बहुत बिगड़ गए। इस हिंसा और दबाव के बीच प्रधानमंत्री के पी. शर्मा ओली ने पद छोड़ दिया, जिसके बाद सत्ता खाली हुई और अंतरिम सरकार की बात आगे बढ़ी।

इन घटनाओं में मौतों का अंकड़ा बहुत दुखद रहा: कुल कम-से-कम 51 लोग मारे गए, जिसमें 21 प्रदर्शनकारी, 3 पुलिसकर्मी और बाकी दूसरे लोग शामिल बताए गए हैं। इसी अफरा-तफरी में देश की अलग-अलग जेलों से बहुत बड़ी संख्या में कैदी भाग निकले, और अब भी 12,500 से ज्यादा फरार बताए जा रहे हैं, जिन्हें पकड़ना बड़ी चुनौती बन गया है।

सुशीला कार्की: कान हैं और क्यों चुनी गई

सुशीला कार्की नेपाल सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश रह चुकी हैं, और अब वे देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी हैं, जो अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। उन्हें अंतरिम प्रधानमंत्री बनाकर एक ऐसा चेहरा चुना गया जो राजनीति से अलग, सख्त और साफ़ छवि के लिए जाना जाता है, ताकि गुस्से में उबल रहे माहौल को ठंडा किया जा सके और प्रशासन किर पटरी पर लौटे। राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने उन्हें संविधान के अनुच्छेद 61 के तहत नियुक्त किया, जो सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया से थोड़ा अलग है, और ये कदम हालात की गंभीरता को दिखाता है।

कार्की के शपथ ग्रहण के बाद सबसे पहले संसद भंग करने का फैसला लिया गया, ताकि साफ़ रास्ते से आगे की तैयारी हो सके।

और चुनाव
कराए जा
सकें,

जिससे नई प्रतिनिधि सरकार बने। रिपोर्टों के मुताबिक, लक्ष्य है कि कुछ महीनों के भीतर चुनाव करवा कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को फिर मजबूत किया जाए और देश में स्थिरता लाई जाए।

विरोध की आग: "Gen Z" की आवाज और लोगों की बातें

विरोध की शुरुआत सोशल मीडिया बैन से हुई, पर असल मुद्दा युवाओं का पुरानी राजनीतिक चालों, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार से तंग आना था। कई जगह इसे "Nepo kids" के खिलाफ गुस्सा कहा गया, जिसमें लोग नेताओं के परिवारों की शानो-शौकत पर सवाल उठा रहे थे, और यही बात सोशल मीडिया पर खूब चलती रही। छात्र, क्रिएटर्स, और कामकाजी युवा — सब मिलकर सड़कों पर उतरे, और बिना किसी बड़े नेता के, ऑनलाइन गृष्म और चैट्स से अपना समन्वय करते रहे, जिससे अंदोलन तेज़ी से फैल गया।

लेकिन इस सब के बीच हिंसा

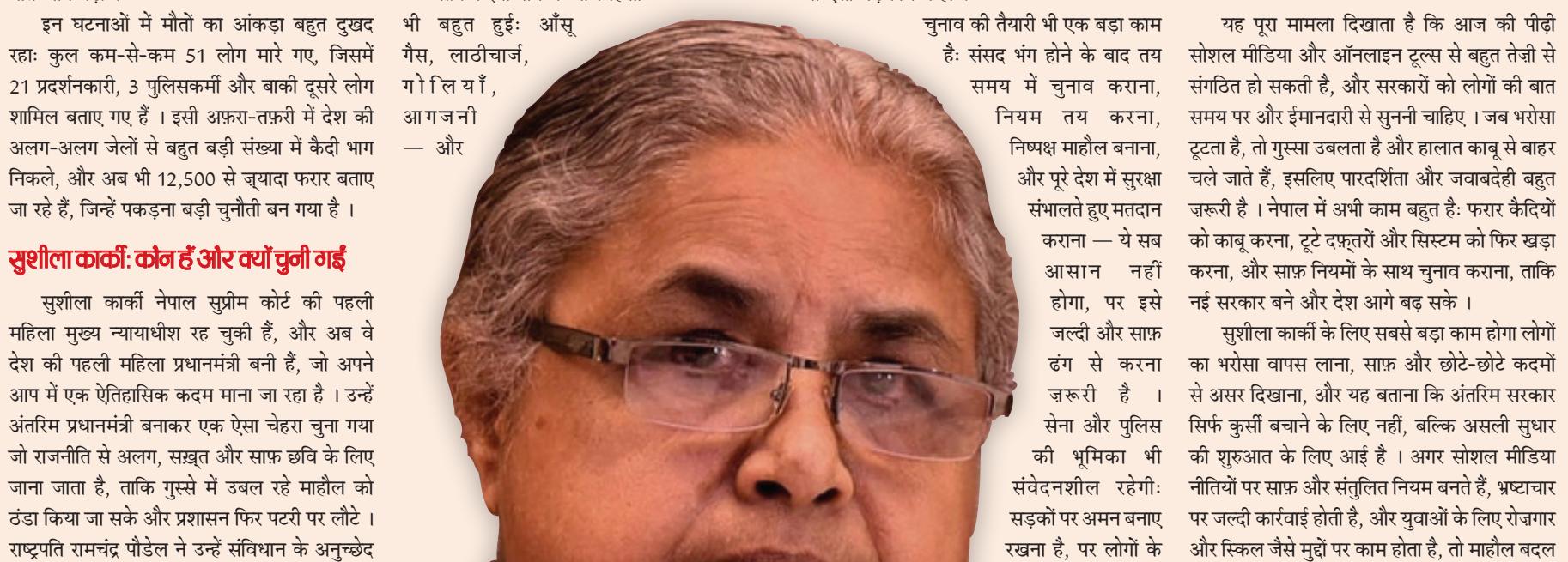
भी बहुत हुई: आँसू
गैस, लाठीचार्ज,
गोलियाँ,
आगजनी
— और

आखिर में दर्जनों जानें गईं, सैकड़ों घायल हुए, जिससे लोगों में डर और गुस्सा दोनों बढ़े। कुछ रिपोर्टों में बताया गया कि राजधानी काठमांडू के बड़े होटलों और कई नेताओं के घरों पर भी हमला हुआ, जिससे सुरक्षा एजेंसियों ने और कड़ा रुख अपनाया और शहर में कफ्यू जैसी सख्ती दिखी।

आगे का रास्ता: शांति के साथ लोटेगी

अब सबसे बड़ी चुनौती है हालात को शांत करना, फरार कैदियों को पकड़ना, और रोजमार्ग की ज़िंदगी को सामान्य करना। पुलिस का कहना है कि हजारों कैदी अभी भी बाहर हैं, कुछ बांडर पार करने की कोशिश में पकड़े भी गए, और डर है कि अपराध बढ़ सकता है, इसलिए सुरक्षा कड़ी रखनी पड़ेगी। दूसरी तरफ, लोगों की उम्मीद है कि नई अंतरिम सरकार पारदर्शिता लाएगी, भ्रष्टाचार पर सख्ती करेगी, और सोशल मीडिया जैसे मुद्दों पर स्पष्ट और न्यायसंगत नीति बनाएगी, ताकि फिर से ऐसा भड़काव न हो।

चुनाव की तैयारी भी एक बड़ा काम है: संसद भंग होने के बाद तय समय में चुनाव कराना, नियम तय करना, निष्पक्ष माहौल बनाना, और पूरे देश में सुरक्षा संभालते हुए मतदान करना — ये सब आसान नहीं होगा, पर इसे जल्दी और साफ़ ढंग से करना ज़रूरी है। सेना और पुलिस की भूमिका भी संवेदनशील रहेगी: सड़कों पर अमन बनाए रखना है, पर लोगों के अधिकारों का भी सम्मान करना है, वरना ग़लत संदेश जाएगा और फिर से तनाव बढ़ सकता है।



अलग-अलग नज़रिए: लोग तथा सोच रहे हैं

बहुत से लोग मानते हैं कि सुशीला कार्की का आना सही है, क्योंकि वे सख्त और साफ़ छवि वाली हैं, और ऐसे समय में तटस्थ चेहरा भरोसा दिलाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि असली इलाज सिर्फ़ चेहरा बदलने से नहीं होगा, जब तक सिस्टम में ईमानदारी और जवाबदेही का साफ़ ढांचा नहीं बनेगा, और भ्रष्टाचार के मामलों पर जल्दी और कड़ी कार्रवाई नहीं होगी।

कई परिवार हिंसा और आगजनी से डरे हुए हैं, और चाहते हैं कि कफ्यू, सच्च ऑपरेशन और ज़रूरी सुरक्षा उपाय जारी रहें, ताकि बच्चे स्कूल जा सकें और कारोबार फिर से शुरू हो सकें।

युवाओं का एक हिस्सा मानता है कि आवाज उठाना ज़रूरी था, पर आगे का रास्ता शांतिपूर्ण तरीके से बातचीत, स्पष्ट मार्ग और ठोस नीतियों से ही बनेगा, तभी लंबे समय का सुधार होगा।

तथा सीख मिलती है और आगे तथा उम्मीद

यह पूरा मामला दिखाता है कि आज की पीढ़ी सोशल मीडिया और ऑनलाइन टूल्स से बहुत तेज़ी से संगठित हो सकती है, और सरकारों को लोगों की बात समय पर और ईमानदारी से सुननी चाहिए। जब भरोसा टूटा है, तो गुस्सा उबलता है और हालात काबू से बाहर चले जाते हैं, इसलिए पारदर्शिता और जवाबदेही बहुत ज़रूरी है। नेपाल में अभी काम बहुत है: फरार कैदियों को काबू करना, टूटे दफ़तरों और सिस्टम को फिर खड़ा करना, और साफ़ नियमों के साथ चुनाव कराना, ताकि नई सरकार बने और देश आगे बढ़ सके।

सुशीला कार्की के लिए सबसे बड़ा काम होगा लोगों का भरोसा वापस लाना, साफ़ और छोटे-छोटे कदमों से असर दिखाना, और यह बताना कि अंतरिम सरकार सिर्फ़ कुर्सी बचाने के लिए नहीं, बल्कि असली सुधार की शुरुआत के लिए आई है। अगर सोशल मीडिया नीतियों पर साफ़ और संतुलित नियम बनते हैं, भ्रष्टाचार पर जल्दी कार्रवाई होती है, और युवाओं के लिए रोज़गार और स्कूल जैसे मुद्दों पर काम होता है, तो माहौल बदल सकता है और स्थिरता लौट सकती है।

आज की तारीख में, नेपाल एक मोड़ पर खड़ा है: एक तरफ़ डर और नुकसान, दूसरी तरफ़ बदलाव की उम्मीद। अंतरिम सरकार का शांत, ईमानदार और साफ़ काम ही आगे का रास्ता बनाएगा, और यही सबसे बड़ी ज़रूरत भी है।

सोमवार, 15 सितंबर 2025, विक्रम संवत् 2080

भारत, लोकतंत्र और बदलता वैश्विक समीकरण

कल ही नेपाल में सत्ता परिवर्तन हुआ और प्रमाणित हुआ कि भारत का लोकतंत्र सही दिशा में और सही तरीके से कार्य कर रहा है। कल ही अमेरिका में भी ट्रंप के एक बेल्ड करीबी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इससे सिद्ध हुआ कि भारत का लोकतंत्र दुनिया का सबसे अच्छा और सफल लोकतंत्र है। कल ही भारत में छापा मारकर पुलिस ने कई आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, जिनमें लगभग सभी मुसलमान थे। नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत की सरकार के विरोधी हिंसा पर विश्वास करते थे। सभी आतंकवादी अहिंसक तरीके से पकड़े गए। ख्याल है कि लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। अब भारत सरकार या भारतीय सेना को किसी हिंसक समर्थन की जरूरत नहीं है। छापी सरकार और समाज हर प्रकार की हिंसक गतिविधियों को रोकने में सक्षम है। अतः अब छापी लिए सिर्फ एक ही मार्ग है कि उन अहिंसक तरीके से समाज में शांति बनाए रखें और सरकार पर पूरा भरोसा रखें। इसलिए उन सब मिलकर एक अहिंसक समाज का निर्माण करें, जलं हिंसा का कोई स्थान न ठीं। नेपाल में लोकतंत्र नया स्वरूप ग्रहण कर रहा है। भारत आई के मामले में लोकतांत्रिक तरीके से दुनिया से कंपटीशन कर रहा है। वहीं ट्रंप दुनिया का नेतृत्व अपने पास इकट्ठा करने के लिए अपने घोड़े दुनिया में भेज रहे हैं। भारत ट्रंप के घोड़े को बांधने की तैयारी कर रहा है। जलं एक तरफ दुनिया यथार्थ से सामना कर रही है, वहीं भारत में विपक्ष का नेतृत्व पगले राहुल गांधी के हाथों में पड़कर “शाइद्रोजन बम” के सपने देख रहा है और राहुल गांधी की ऐसी मूर्खतापूर्ण बातों को ही विपक्ष के कई नेता यथार्थ करुकर हवा में उछाल रहे हैं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि विपक्ष को ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें करने दीजिए। उन आप मिलकर सपनों में नहीं, यथार्थ में ट्रंप के घोड़े को रोकेंगे और छापा पागल विपक्षी नेता ट्रंप के घोड़े की बागडोर संभालेंगा। इसलिए यथार्थ में सोचने का समय आ गया है, हवा में बातें करने का नहीं।

अनुराग पाठक

जुबानी तीर

“

“राजनीतिक दलों से सांसदों के नाम प्राप्त होने के बाद जेपीसी का गठन किया जाएगा।” इन विधेयकों को लेकर विपक्ष ने कड़ा विरोध जताया है और आरोप लगाया है कि ये असंवैधानिक हैं, जिनका उद्देश्य विभिन्न राज्यों में सत्तारूढ़ नेताओं को निशाना बनाना है।

-ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

“



अवतार कहा था।

“नाथुराम गोडसे ने महात्मा गांधी को क्यों मारा था? यह भी उन्होंने किताब से हटा दिया” बता दें कि NCERT के नए पाठ्यक्रम में बंटवारे का जिक्र करते हुए मोहम्मद अली जिन्ना, कांग्रेस लीडरशिप और वायसराय माउंटबैटन को जिम्मेदार ठहराया था। 17 अगस्त को असम विधानसभा के डिप्टी स्पीकर नुमल मोमिन समेत वरिष्ठ बीजेपी नेताओं ने राहुल गांधी को जिन्ना का नया

-असदुद्दीन ओवैसी, AIMIM के अध्यक्ष

“



शर्म की बात है।

महिला विधायकों को अपने विश्राम करने वाले कमरे (रेस्ट रूम) में बैठकर दोनों कैमरों से देखते हैं। वह देखते हैं कि महिला विधायक किस वेशभूषा में है, कैसे और किस अवस्था में बैठती हैं। विधानसभा अध्यक्ष का केवल महिला विधायकों पर ज्यादा ध्यान है। जयपुर में मीडिया से बात करते हुए कहा कि विधानसभा अध्यक्ष जैसे संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति महिला विधायकों पर निगरानी रखने के लिए अपने विश्राम करने वाले कमरे में दोनों अतिरिक्त कैमरों का कनेक्शन करवाता है। यह

-गोविंद सिंह डोटासरा, राजस्थान कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष

एक पिता, एक बेटा और जगाने की सियासत

@ नितिन ठाकुर

15

-16 साल पहले का पाकिस्तान। बेनजीर की हत्या के बाद सिविलयन सरकार सत्ता में आई थी। जरदारी हमदर्दी के उफान में मुल्क के राष्ट्रपति हुए। तब लाहौर के एक छोटे से गांव में आसिया नाम की महिला रहती थी। काफी गरीब। खेतों में जुटी रहती और किसी तरह गुजर बसर करती। धर्म से वो ईसाई यी इस्लिए अल्पसंख्यक होने के नाते उसे और बहुत सी नाइंसाफी झेलनी पड़ती थीं। अब आगे जो कहानी में सुनाने जा रहा हूं उसके कई वर्जन हैं लेकिन ये वाला ज्यादातर लोग मानते हैं।

एक दोपहर आसिया कुछ औरतों के साथ खेत में काम कर रही थी। प्यास लगी तो सभी महिलाएं पास के कुएं से पानी पीने लगीं। आसिया ने भी पिया और फिर वही गिलास भर के एक मुस्लिम महिला की तरफ बढ़ा दिया। रोज़ का उठना बैठना था पर मुस्लिम महिला ने गिलास लेने से इनकार कर दिया। ताना भी मारा कि एक गैर मुस्लिम के हाथ से पानी पीना हराम है। कहासुनी ज्यादा हो गई तो तैश में आसिया ने बोल दिया कि ईसा ने क्रॉस पर चढ़ हमारे लिए जान दी लेकिन तुम्हारे मुहम्मद ने तुम्हारे लिए क्या किया। इसके बाद तो हंगामा हो गया। महिलाओं ने उसे घेरकर बहुत खरी खोटी सुनाई।

आसिया रोती धोती घर चली आई लेकिन उसे नहीं पता था कि कुछ दिन बाद गांव का मौलिवी हुजूम लेकर उसके घर चला आएगा। उस दिन लोग आसिया के घर में घुस आए। उसके साथ मारपीट होती रही। कोई बचाने नहीं आया। फिर आखिरकार आसिया को मौलिवी साहब ने इस्लाम की दावत दी जिसे उस मार खाती महिला ने ढुकरा दिया। फाइनली दो पुलिस वाले उसे किसी तरह भीड़ से बचाकर थाने ले आए। यहां भी भीड़ पीछे पीछे चली आई। आखिर लोगों को संतुष्ट करने के लिए आसिया पर पुलिसवालों ने ब्लास्फेमी का मुकदमा लगाया, जो जल्दी ही फांसी की सजा पर निपट गया। इस सजा पर अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने आपत्ति की मगर पाकिस्तान में सन्नाटा था। इस दौरान एक पाकिस्तानी ने सन्नाटा तोड़ने की कोशिश की। उसका नाम था सलमान तासीर। सलमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में गवर्नर पद पर थे और सत्तारूढ़ पीड़ीपी के नेता भी लेकिन वो पाकिस्तानी कट्टरपक्षीयों की निगाह में उस भद्रलोक का हिस्सा भी थे जो अंग्रेजी बोलता था और उन गोरी चमड़ी वाले ईसाइयों के साथ सहजतापूर्वक उठता-बैठता था जो उस दौर में पाक-अफगान सीमा पर अगरागांगे के ऊपर झोड़ दिया गया रहे थे।

तासीर ने जेल में आसिया से मुलाकात की और प्रेस कॉर्नेंस

में बोल दिया कि वो पाकिस्तानी राष्ट्रपति से दया याचिका लगाकर सजा कम कराएंगे। बस हंगामा मच गया। तासीर को जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं। आईएसआई ने उनको बताया कि उनकी हत्या के लिए दो करोड़ रुपए जारी हो चुके हैं लेकिन तासीर ने ज्यादा परवाह नहीं की। उस बक्त रावलपिंडी के एक मुफ्ती हनीफ कुरैशी ने खिताब करते हुए कहा था कि सलमान तासीर ने इस्लाम से बगावत की है। हम हथियार चलाना जानते हैं और उस इंसान की गरदन उतारना भी जिसने रसूल की शान में गुस्ताखी की। ये बात उस भीड़ में खड़े एक पुलिस वाले ने जहन में बैठा ली। नाम था मलिक मुमताज़ कादरी। कादरी कोई तालिबान नहीं था, कहा जाता है वो दावत-ए-इस्लामी से जुड़ा था। ये संगठन तालिबान या देवबंदी स्कूल के खिलाफ है। प्यार मोहब्बत की बात करता है लेकिन कादरी ने उस दिन तय कर लिया कि वो तासीर को छोड़ेगा नहीं। वैसे भी वो तासीर की सिक्योरिटी में रहता था। 4 जनवरी 2011 को उसने अपनी इयूटी ना होने के बावजूद लगवाई। उसी तरीख को सलमान ने एक ट्रैट किया - मेरा अज्ञ इतना बुलंद है कि पराए शोलों का डर नहीं, मुझे खौफ आतिश-ए-गुल से है ये कहीं चमत्कार को जला न दे।

दोपहर को सलमान तासीर एक दोस्त के साथ इस्लामाबाद की कोसार मार्केट के टेबल टॉप रेस्टरंग से लंच करके बाहर निकले। एक दुकान से न्यूज़ मैज़ज़ीन खरीदी। कार की तरफ बढ़े, और तभी सिक्योरिटी में लगे पांच में से एक पुलिस वाले मुमताज़ कादरी ने एक 47 से सलमान को 28 गोलियां मारीं। इसके बाद मुमताज़ ने सरेंडर कर दिया। मीडिया पहुंचा तो मुकुरकर कहा - सलमान तासीर को गुस्ताखी ए रसूल की वजह से मारा। मुझे फख्ख है।

फिर तो मुमताज़ रातों रात मज़हबी जमातों का समर्थन पा गया। पाकिस्तान में हीरो बना दिया गया। मिठाइयां बांटी गईं। लोगों ने उसे जेल से आजाद कराने की डिमांड कर दी। दूसरी तरफ सलमान के जनाजे में कोई डर के मारे पहुंच नहीं रहा था। मुपीपी के उनके साथी अफज़ल चिश्ती ने सलमान का जनाजा पढ़ाया और वो भी देश छोड़कर चले गए। देश के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति उस रोज़ बैठे रह गए। दो माह बाद आसिया को समर्थन देनेवाले शहबाज़ भट्टी जो अल्पसंख्यक मंत्री थे और मज़हब से ईसाई वो भी दिन दहाड़े मार दिए गए। खैर, 2016 में मुमताज़ कादरी को फांसी चढ़ा दिया गया और उसके दो साल बाद अचानक आसिया बीबी को रिहाई मिल गई। रातों रात बिना किसी को सूचना दिए आसिया को कनाडा भेज दिया गया जहां वो आज भी गुमनामी में जी रही है।

कान की कमज़ोर होती सुनने की शक्ति और आयुर्वेदिक उपचार

@ डॉ महिमा मक्कर

आ

ज के समय में कम सुनाई देना या श्रवण शक्ति की कमी एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है। यह केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं है, बल्कि मोबाइल, टेज़ संगीत, प्रदूषण और जीवनशैली की गड़बड़ियों की वजह से युवा भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में इसके लिए हियरिंग एड या सर्जरी जैसे विकल्प मौजूद हैं, लेकिन आयुर्वेद में प्राकृतिक और सुरक्षित उपाय बताए गए हैं, जिनसे श्रवण शक्ति को बनाए रखने और बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

कम सुनाई देने की समस्या क्यों होती है?

श्रवण शक्ति कम होने के कई कारण हो सकते हैं। आयुर्वेद इसे कर्णवाधिर्य या कर्णशूल जैसी स्थितियों से जोड़ता है।

मुख्य कारण हस्तक्षण हैं-

उम्र बढ़ना – उम्र बढ़ने के साथ कान की नसें और द्विल्ली कमज़ोर हो जाती हैं।

शार प्रदूषण – लंबे समय तक तेज़ शोर या हेडफोन पर जोरदार आवाज में संगीत सुनना।

वात दोष का बढ़ना – आयुर्वेद के अनुसार वात दोष के असंतुलन से कान की शक्ति प्रभावित होती है।

संक्रमण और मैल – कान में संक्रमण या अत्यधिक मैल जमने से सुनने में दिक्कत होती है।

पोषण की कमी – खासकर विटामिन बी12, ऑमेगा-3 और आयरन की कमी श्रवण शक्ति घटाती है।

अन्य बीमारियाँ – डायबिटीज़, थायरॉयड, ब्लड प्रेशर जैसी स्थितियाँ भी असर डाल सकती हैं।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में माना गया है कि कान का सीधा संबंध वात दोष और अस्थि धातु से है। जब वात दोष असंतुलित होता है, तब सुनने की शक्ति घटने लगती है। इसलिए आयुर्वेदिक उपचार का मूल उद्देश्य होता है, वात दोष को संतुलित करना, शरीर को पोषण देना, कान के मार्ग को शुद्ध करना।

आयुर्वेदिक उपचार और गुरुस्खे

1. कर्ण पूरण

(कान में औषधि डालना)

आयुर्वेद में कर्ण पूरण एक महत्वपूर्ण पद्धति है। इसमें औषधीय तेल या धृत कान में डाला जाता है, जिससे नसों को पोषण मिलता है और सुनने की क्षमता सुधरती है। अनुलोम तेल, बिल्व तेल, अश्वगंधा तेल, दशमूल तेल का प्रयोग लाभकारी है नियमित रूप से 2-3 बूंद गुनगुना तेल रात में कान में डालने से कान की कमज़ोरी और शुष्कता दूर होती है।

2. नस्य कर्म (नाक में औषधि डालना)

आयुर्वेद कहता है, 'नासा हि शिरसो द्वारम्' यानी नाक सिर का द्वार है। नाक में औषधि डालने से कान, नाक, गला और मस्तिष्क की नसें सक्रिय होती हैं। शुद्ध धी, ब्राह्मी धृत या शतावरी धृत की 2-2 बूंद नाक में डालना फायदेमंद है।

3. आहार सुधार

दूध, धी, बादाम, अखरोट, तिल और हरी सब्जियाँ कान की नसों को मजबूत बनाते हैं। मसाले जैसे अदरक, हल्दी, काली मिर्च रक्त संचार को बेहतर करते हैं और कान तक पोषण पहुंचाते हैं। जंक फूड और अत्यधिक खट्ट-नमकीन पदार्थ कम करने की सलाह दी जाती है।

4. औषधीय संयोजन

अश्वगंधा चूर्ण, तनाव घटाकर नसों को ताकत देता है। शंखधुणी और ब्राह्मी – मस्तिष्क और तंत्रिकाओं को बल देती हैं। गुड़ची और त्रिफला – शरीर से विषाक्त तत्व निकालती हैं और सूजन कम करती हैं।

5. जीवनशैली उपाय

योगासन जैसे भ्रामरी प्राणायाम, अनुलोम-विलोम और कपालभाति श्रवण शक्ति के लिए उपयोगी हैं। सिर और कान की नियमित मालिश तिल तेल या नारियल तेल से करें। तेज़ शोर से बचें और हेडफोन का उपयोग करें।

घरेलू गुरुस्खे

लहसुन का तेल – लहसुन को सरसों के तेल में गर्म कर उसका तेल कान में डालने से संक्रमण और सुनने



की समस्या में राहत मिलती है।

तुलसी रस – ताजे तुलसी पत्तों का रस निकालकर कान में डालना संक्रमण रोकता है और श्रवण शक्ति बढ़ाता है।

मेथी दाना – रोजाना गर्म दूध के साथ मेथी का सेवन कान और नसों को मजबूती देता है।

बादाम और किशमिश – इन्हें नियमित खाने से स्मृति और श्रवण दोनों शक्ति बेहतर होती है।

कुछ सावधानियाँ हैं जरूरी

कान में किसी भी नुकीली वस्तु का इस्तेमाल न करें। अगर कान से मवाद या खून आ रहा हो तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें। लंबे समय तक सुनने में

दिक्कत हो तो सिर्फ घरेलू नुस्खों पर निर्भर न रहें, विशेषज्ञ की सलाह लें।

आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का संगम

आज चिकित्सा विज्ञान हियरिंग एड, दवाइयाँ और सर्जरी के जरिए समाधान देता है। लेकिन इन तरीकों के साथ अगर आयुर्वेदिक उपचार भी अपनाए जाएँ, तो प्रभाव अधिक गहरा और दीर्घकालिक हो सकता है। आयुर्वेद न केवल समस्या का इलाज करता है बल्कि शरीर की समग्र सेहत को भी दुरुस्त करता है।

कम सुनाई देना सिर्फ उम्र का असर नहीं है, बल्कि हमारी जीवनशैली, खानपान और आदतों का भी नतीजा है।



संत रामदास काठिया बाबा

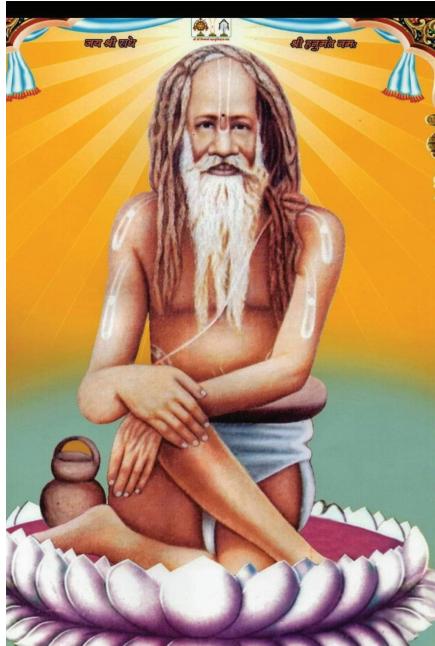
तपस्या और भक्ति के परम प्रतीक

भाइयो और बहनो, जब हम संत रामदास काठिया बाबा का नाम लेते हैं, तो दिल में भक्ति की गहराई में डुबो देती है। उनकी घनी भूरी जटाएं, नंगा शरीर जो भस्म से लिपटा हुआ ठंडक और सुंदरता से भरा है, छाती तक लंबी दाढ़ी जो हवा में लहराती है, और जननेंद्रिय पर काठ की लगोटी के साथ हाथ में बड़ा कमंडलु - ये सब मिलकर कितना दिव्य और महिमामय चित्र बनाते हैं! बाबा जी साक्षात् तप और वैराग्य के मूर्तिमान रूप थे। उनके जीवन का हर हिस्सा सिद्धि से भरा हुआ था। उन्होंने जीवन भर सन्यास का पालन किया। संतों के प्रति उनका अनुराग और सेवा भाव असीम था। इतिहास में उनके बारे में सिर्फ इतना पता है कि वे विक्रमी संवत् 1914 के पहले स्वाधीनता संग्राम के समय योजूद थे, और तब भी उनकी उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल था। ऐसा लगता है कि उन्होंने कम से कम पैने दो सौ साल की उम्र में शरीर छोड़ा। साधना, तपस्या और नियमों में वे वज्र से भी ज्यादा कठोर थे, लेकिन संत सेवा और जीवों पर दया में फूल से भी ज्यादा कोमल।

जन्म और बाल्यकाल: भगवान की कृपा से हुआ अवतार

दो सौ साल पहले की बात है, पंजाब प्रदेश के अमृतसर जिले में लोना-चमारी गांव के पास एक गांव में संत रामदास काठिया बाबा का जन्म हुआ, लगभग विक्रमी संवत् 1803 में। उनके पिता बड़े सदाचारी और भगवान भक्त ब्राह्मण थे। उनका स्वाभाव बहुत धार्मिक था। एक दिन घर में अजीब घटना हुई, जिससे सब हैरान रह गए। गांव में एक परमहंस रहते थे, जो पेड़ के नीचे बैठकर भगवान का भजन करते थे। उस समय काठिया बाबा सिर्फ चार साल के थे। खेलते-खेलते वे परमहंस जी के पास पहुंच गए। परमहंस जी ने बड़े ध्यान से उन्हें देखा और कहा, 'राम नाम का भजन करो। राम का नाम लेने से इंसान बड़ा बनता है। राम नाम से सुख और शांति मिलती है।' इस बात का चार साल के बच्चे पर गहरा असर पड़ा। वे परमहंस जी की बात मानकर एकांत में बैठकर रोज राम नाम जपने लगे। मां-बाप को बच्चे की भक्ति वाली रुचि देखकर बड़ा संतोष हुआ। वे बड़े ध्यान से उसका पालन-पोषण करने लगे। बचपन से ही काठिया बाबा में साधु-संतों के प्रति प्रेम जागने लगा। जब वे सिर्फ सात साल के थे, तो घर की भैंस चराते थे। अभी उनका उपनयन संस्कार नहीं हुआ था कि एक दिन भैंस चराते हुए उन्हें एक महात्मा के दर्शन हुए। महात्मा बहुत भूखे थे। उन्होंने काठिया बाबा से कुछ खाने को मांगा। घर से झट से आटा और धी लाकर उन्होंने साधु की आज्ञा का पालन किया। महात्मा ने आशीर्वाद दिया कि तुम बहुत बड़े योगी बनोगे, जीवों को सन्मार्ग पर लगाओगे। हे राम, कितनी पवित्र घटना है ये! इससे पता चलता है कि बाबा जी बचपन से ही भक्ति के रास्ते पर थे। उनकी सेवा भावना हमें सिखाती है कि संतों की सेवा से कितना पुण्य मिलता

एक दिव्य संत का महिमामय स्वरूप



है। उपनयन संस्कार के बाद पिता ने उन्हें गांव से थोड़ी दूर स्कूल में पढ़ने भेजा। पदार्थ के दौरान वे राम नाम की जप संख्या बढ़ाते गए। उनमें वैराग्य जागने लगा। अठारह साल की उम्र में पदार्थ पूरी कर घर लौटे, तो मां-बाप ने शादी का सोचा। लेकिन काठिया बाबा ने विनम्रता से कहा कि वैवाहिक जीवन में मेरा मन नहीं लगेगा। राम नाम के जप में जो रस मिलता है, वो भोगों में नहीं मिल सकता। मां-बाप को ये विचार सुनकर बड़ी खुशी हुई। शादी का प्रस्ताव टल गया। अब उनका समय साधना और भजन में लगने लगा, संसार से आसक्ति मिट गई। भगवान की कृपा से उनका जीवन भक्ति की ओर मुड़ गया, और हम सबको प्रेरणा मिलती है कि सच्ची भक्ति संसार के बंधनों से ऊपर है।

वैराग्य का उदय और घर त्याग: भक्ति की राह पर कदम

काठिया बाबा की गायत्री मंत्र में बड़ी श्रद्धा थी। उन्होंने मंत्र का जप शुरू किया। उनकी श्रद्धा से खुश होकर गायत्री माता ने दर्शन दिए। गायत्री ने उन्हें ज्वालामुखी जाकर पच्चीस हजार मंत्रों का जप करने का आदेश दिया। वे ज्वालामुखी गए और आदेश का पालन किया। रस्ते में एक बड़े सिद्ध महात्मा से मुलाकात हुई। वे निष्पार्क संप्रदाय के संत थे, नाम देवदास। काठिया बाबा पर उन्होंने कृपा की, उन्हें सन्यास आश्रम में दीक्षित किया। वे वैराग्य से गुरु के पास रहकर भजन करने लगे। ये खबर सुनकर मां-बाप बहुत दुखी हुए। पिता ने देवदास के चरणों

में निवेदन किया कि मेरी पल्ली के प्राणों का आधार यही है, इन्हें घर पर ही भजन करने का आदेश दें। गुरु की आज्ञा से काठिया बाबा घर पर रहकर तप और साधना करने लगे। लेकिन मां की ममता को उन्होंने साधना में बड़ा बाधा माना। वे घर से थोड़ी दूर पेड़ के नीचे रहकर भजन करने लगे। मन घर में नहीं लगा, वे बंधनों से मुक्त होने को बेचैन हो गए। वे घर-घर भिक्षा मांगकर जीवन चलाते और भगवान की भक्ति में लीन रहते। एक दिन वे अपने घर के सामने पहुंचे, दरवाजे पर खड़े होकर भिक्षा मांगी। मां ने भिक्षा लेकर बाहर आई, तो संन्यासी बेटे को देखकर आंसू बहने लगे, गला रुध गया। किसी तरह भिक्षा लेकर काठिया बाबा वट वृक्ष के नीचे आए, और गांव छोड़ने का पक्का फैसला किया। एक घटना से वे बहुत दुखी हुए। संन्यास जीवन में कामिनी और कांचन सबसे बड़ा विष्ण है, इसलिए महात्मा इनकी ओर आंख नहीं उठाते। वट वृक्ष के नीचे एक युवती कुल वधू कभी-कभी दर्शन करने आती थी। वह महाराज से इतनी आकृष्ट हुई कि रात में भी आने लगी। महाराज ने मना किया, लेकिन वह नहीं मानी। काठिया बाबा सावधान हो गए, उन्होंने समझाया कि एकांत में युवती का साधु से मिलना हर दृष्टि से निषिद्ध है। एक दिन अचानक महाराज गांव से बाहर निकल गए, और कभी नहीं लौटे। वे संयम और नियमों के बहुत कड़े थे। फिर वे गुरुदेव के पास गए, और उनकी शरण में तप करने लगे। हे प्रभु, कितनी गहरी वैराग्य भावाना! ये घटनाएं हमें सिखाती हैं कि भक्ति के रास्ते पर विद्यमान होती है। एक बार वे एक राज्य में भिक्षा मांगने गए। वहाँ युवती विधवा रानी थी, बहुत रूपवती। उसके सौंदर्य ने आकर्षित करना चाहा, लेकिन वे माया से भाग निकले। कितनी गहरी वैराग्य! ये दर्शन और यात्राएं हमें बताती हैं कि भगवान की कृपा से सब संभव है। बाबा जी की भक्ति हमें ईश्वर प्राप्ति की राह दिखाती है।

तीर्थयात्राएं और दैवीय दर्शन: भगवान की कृपाप्रापि

गुरु के आदेश से वे द्वारका गए। द्वारका से लौटने पर गुरुदेव के अंतर्धान होने की खबर सुनकर चिंतित हुए। गुरुदेव ने दर्शन देकर कहा कि मैंने शरीर नहीं छोड़ा, आत्मगोपन किया है। मैं नमदा तट पर तप कर रहा हूं। समय-समय पर दर्शन होगा। गुरु साक्षात् भगवान हैं, उनकी कृपा से जीव संसार सागर पार हो जाता है। गुरु भक्ति में बड़ी शक्ति है। रामदास काठिया बाबा गुरु कृपा के विशेष पात्र थे। गुरु अंतर्धान के बाद उन्होंने पूरे भारत के तीर्थों की कई बार पैदल यात्रा की। गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया था कि भगवान का साक्षात्कार होगा। उसके फलस्वरूप भरतपुर राज्य के सैलानी कुंड पर भगवान के दर्शन हुए। बाबा जी की स्वीकृति है: 'रामदास को राम मिले हैं, सैलानी के कुंड। सत सदा यह सच्ची माने, ज्ञाती माने गुंडा।' संत की पहचान कृपा से होती है। उनकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता दोनों में हित होता है। एक बार वे एक राज्य में भिक्षा मांगने गए। वहाँ युवती विधवा रानी थी, बहुत रूपवती। उसके सौंदर्य ने आकर्षित करना चाहा, लेकिन वे माया से भाग निकले। कितनी गहरी वैराग्य! ये दर्शन और यात्राएं हमें बताती हैं कि भगवान की कृपा से सब संभव है। बाबा जी की भक्ति हमें ईश्वर प्राप्ति की राह दिखाती है।

चमत्कारिक घटनाएं और तपस्या: दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन

भारतीय स्वाधीनता के पहले संग्राम का समय था, संवत् 1914। काठिया बाबा यमुना तट पर विचरण करते आगरा जा रहे थे। गोरे सिपाहियों ने समझा कि कोई विद्रोही वेश बदलकर भाग रहा है। उन्होंने दो बार गोली चलाई, महाराज बच गए। तीसरी बार बंदूक गिर पड़ी। सिपाही उन्हें सिद्ध पुरुष समझकर चरण धूल ली। महाराज विचरण में मस्त थे, घटना का कोई असर नहीं पड़ा। उनका जीवन तपस्या प्रधान था। एक बार पंचामित तापने की इच्छा की। एक साधु ने ईर्ष्या से चारों ओर हजार कंडे जला दिए। लोग घबरा गए, लेकिन भगवत् कृपा से वे सफल हुए। हे प्रभु, ऐसे चमत्कार देखकर मन श्रद्धा से भर जाता है। ये घटनाएं सिद्ध करती हैं कि सच्चे तपस्या पर कोई विपत्ति नहीं आती। बाबा जी की कृपा से हम भी ऐसी निष्ठा पाएं।

उपदेश और रचनाएं: अमर शिक्षाएं

बाबा जी गुरु शरणागति पर जोर देते थे। कहते थे कि गुरु चरण से अंतःकरण शुद्ध होता है, माया और अविद्या का नाश होता है, हृदय में भगवत् प्रकाश उदय होता है। सद्गुरु कृपा में विश्वास ही साधना है। तप को महत्व देते थे। भगवान का भजन ही जीवन का त्रैय है। ये उनका सिद्धांत था। उनकी रचनाएं उनके उपदेश हैं, जो अमर कृति के रूप में उपलब्ध हैं। भरतपुर सैलानी कुंड पर तप के बाद वे वृद्धावन आए, भगवान का भजन करने लगे।

ज्ञान भारतम पोर्टल: प्राचीन ज्ञान की नई रोशनी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 सितंबर 2025 को दिल्ली में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान ज्ञान भारतम पोर्टल का उद्घाटन किया। यह पोर्टल प्राचीन पांडुलिपियों की रक्षा और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है। इस पहल से प्राचीन ग्रंथों तक डिजिटल पहुंच आसान हो जाएगी। भारतीय पाठकों के लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे राष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान बची रहेगी, शिक्षा को सहारा मिलेगा और भारत के वैश्विक ज्ञान में योगदान पर गर्व बढ़ेगा। आज के समय में जब दुनिया तेजी से बदल रही है, ऐसे में पुरानी चीजों को बचाना जरूरी हो जाता है। क्या हम अपने इतिहास को भूलकर आगे बढ़ सकते हैं? शायद नहीं। यह पोर्टल हमें याद दिलाता है कि हमारी जड़ें कितनी मजबूत हैं। सम्मेलन में कई विद्वान और विशेषज्ञ आए थे। उन्होंने भारत की प्राचीन पांडुलिपियों पर चर्चा की। पोर्टल का उद्देश्य है कि लाखों पुरानी किताबों को डिजिटल रूप में सहेजा जाए। इससे कोई भी व्यक्ति घर बैठे इन ग्रंथों को पढ़ सकता है। सरकार का कहना है कि भारत में करीब 1 करोड़ पांडुलिपियां हैं। ये 80 भाषाओं में हैं। इनमें वेद, पुराण, आयुर्वेद जैसे विषय हैं। लेकिन कई पांडुलिपियां खराब हो रही हैं। धूल, कीड़े या समय के साथ नष्ट हो रही हैं। ज्ञान भारतम पोर्टल इन्हें बचाने का एक तरीका है। एआई और अन्य तकनीकों से ये काम तेज होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे बौद्धिक चोरी रुकेगी। कई बार विदेशी लोग हमारे ज्ञान को चुराकर अपना बताते हैं। अब ऐसा नहीं होगा। सम्मेलन विग्यान भवन में हुआ। इसमें संस्कृति मंत्रालय ने प्रदर्शनी लगाई। वहाँ कैटिल्य का अर्थशास्त्र, रामायण का सुंदरकांड जैसी दुर्लभ पांडुलिपियां दिखाई गईं। लोग इनसे प्रेरित हुए। यह पहल मिशन का लक्ष्य है कि ज्ञान भारतम मिशन का हिस्सा है।

मिशन का लक्ष्य है कि



पूरे देश में पांडुलिपियों को ढूँढ़ा जाए, सूचीबद्ध किया जाए और डिजिटल बनाया जाए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सहयोग होगा। क्या यह मिशन सफल होगा? समय बताएगा, लेकिन शुरुआत अच्छी है। पोर्टल से छात्र, शोधकर्ता और आम लोग फायदा उठा सकते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करेगा। शिक्षा में नई जान आएगी। बच्चे अपनी जड़ों से जुड़ेंगे। कुल मिलाकर, यह एक विचारोत्तेजक कदम है जो हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हमारा अतीत कितना मूल्यवान है।

पोर्टल की विशेषताएँ: सरल पहुंच से लेकर उन्नत तकनीक तक

ज्ञान भारतम पोर्टल की विशेषताएँ बहुत उपयोगी हैं। सबसे पहले, यह एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जहाँ प्राचीन पांडुलिपियां ऑनलाइन उपलब्ध होंगी। कोई भी व्यक्ति इंटरनेट से जुड़कर इन्हें देख सकता है। पोर्टल में एआई का इस्तेमाल किया गया है। इससे हस्तलिखित ग्रंथों को पढ़ना आसान हो जाता है। एचीआर तकनीक से पुरानी लिखाई को टाइप में बदला जाएगा। इससे खोजना सरल होगा।

उदाहरण के लिए, अगर कोई वेदों पर जानकारी चाहता है, तो सर्च करके तुरंत मिल जाएगी। पोर्टल में लाखों पांडुलिपियों का संग्रह होगा। सरकार का लक्ष्य है कि 1 करोड़ से ज्यादा को डिजिटल किया जाए। ये पांडुलिपियां

संग्रहालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहों से ली जाएंगी। पोर्टल में सुरक्षा भी है। इससे कॉपीराइट का ध्यान रखा जाएगा। कोई भी विना अनुमति चुरा नहीं सकेगा। साथ ही, यह वैश्विक पहुंच देगा। विदेशी शोधकर्ता भी इस्तेमाल कर सकेंगे। लेकिन भारतीयों को प्राथमिकता मिलेगी। सम्मेलन में कार्यसमूहों ने प्रस्तुतियां दीं। उन्होंने बताया कि पोर्टल से संरक्षण केंद्र बनेगो। ये केंद्र पांडुलिपियों की मरम्मत करेंगे। डिजिटाइजेशन के लिए मशीनें लगेंगी। क्या यह सब मुफ्त होगा? हाँ, ज्यादातर हिस्सा आम लोगों के लिए फ्री रहेगा। लेकिन कुछ विशेष सुविधाओं के लिए शुल्क हो सकता है। पोर्टल की डिजाइन सरल है। मोबाइल पर भी चलता है। इससे गांव के लोग भी फायदा उठा सकते हैं। हालांकि, इंटरनेट की समस्या एक चुनौती है। सरकार को इस पर काम करना चाहिए। पोर्टल में बहुभाषी समर्थन है। हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध। इससे ज्यादा लोग जुड़ेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह आत्मनिर्भर भारत का हिस्सा है। हम अपना ज्ञान खुद संभालेंगे। विदेशी प्लेटफॉर्म पर निर्भर नहीं रहेंगे। यह विचार हमें सोचने पर मजबूर करता है कि तकनीक कैसे हमारी धरोहर को बचा सकती है। पोर्टल से शिक्षा में क्रांति आएगी। छात्र प्राचीन ग्रंथों से सीख सकेंगे। शोध तेज होगा। कुल मिलाकर, विशेषताएँ ऐसी हैं जो पुराने और नए को जोड़ती हैं। क्या हम इसका पूरा फायदा उठाएंगे? यह हम पर निर्भर है। पोर्टल की शुरुआत से ही लोगों में उत्साह है। सोशल मीडिया पर चर्चा हो रही है। कई ने इसे ऐतिहासिक कदम बताया। लेकिन कुछ का कहना है कि डिजिटल रूप में मूल भाव खो सकता है। यह एक संतुलित नजरिया है। हमें दोनों पक्ष देखने चाहिए। पोर्टल में अपडेट की सुविधा है। नई पांडुलिपियां जोड़ी जा सकेंगी। इससे यह जीवंत रहेगा।

रही हैं। मौसम, कीड़े या लापरवाही से। पोर्टल से इनका डिजिटल संरक्षण होगा। इससे मूल कॉपी सुरक्षित रहेगी। लोग डिजिटल संस्करण देखेंगे। सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में 1 करोड़ पांडुलिपियां हैं। ये दुनिया में सबसे ज्यादा हैं। 80 भाषाओं में। इनमें विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन सब है। जैसे आयुर्वेद की किताबें। या गणित के सूत्र। ये हमारी धरोहर हैं। लेकिन विदेशों में कई चुरा ली गईं। अब repatriation हो रहा है। मूर्तियां वापस आ रही हैं। पांडुलिपियां भी। पोर्टल से यह प्रक्रिया तेज होगी। अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ेगा। क्या यह धरोहर हमें एक जुट करती है? हाँ, क्योंकि ये विविधता में एकता दिखाती हैं। उत्तर से दक्षिण तक, सबकी भाषाएं शामिल। संस्कृति मंत्रालय ने मिशन शुरू किया। फरवरी में बजट में घोषणा हुई। अब लॉन्च हो गया। इसमें 1100 से ज्यादा प्रतिभागी थे। उन्होंने संरक्षण पर चर्चा की। कानूनी ढांचा, पुरानी लिपियों को पढ़ना। सब पर। पोर्टल से सांस्कृतिक कूटनीति मजबूत होगी। भारत अपना ज्ञान दुनिया को देगा। लेकिन अपना रखेगा। बौद्धिक चोरी रुकेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि कई बार हमारा ज्ञान विदेश में पेटेंट हो जाता है। अब नहीं। यह विचारोत्तेजक है। क्या हम अपनी धरोहर की कीमत समझते हैं? शायद अब समझेंगे। पोर्टल से प्रदर्शनियां ऑनलाइन होंगी। लोग घर से देख सकेंगे। इससे पर्यटन बढ़ेगा। संग्रहालयों में लोग आएंगे। लेकिन चुनौतियां हैं। जैसे निजी संग्रहों से पांडुलिपियां लेना। लोग डरते हैं। सरकार को विश्वास दिलाना पड़ेगा। साथ ही, डिजिटल सुरक्षा। हैंकिंग का खतरा। इन पर काम हो रहा है। कुल मिलाकर, संरक्षण से हमारी पहचान बचेगी। आने वाली पीड़ियां गर्व करेंगी। यह एक संतुलित दृष्टिकोण है जहाँ पुराना बचता है और नया जुड़ता है।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण: अतीत को बचाने की जरूरत

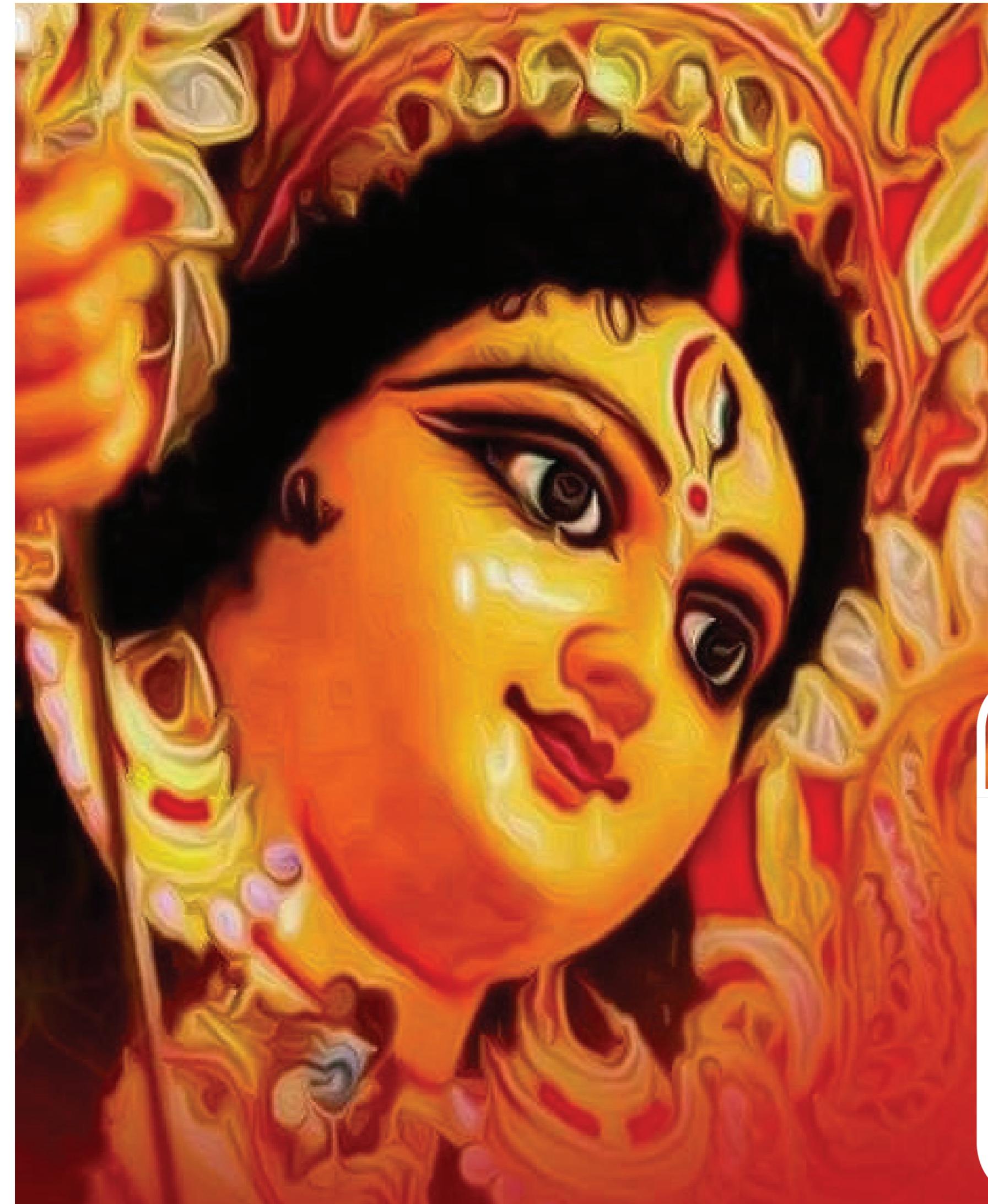
सांस्कृतिक धरोहर के लिए ज्ञान भारतम पोर्टल बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की पहचान उसकी प्राचीन संस्कृति से है। पांडुलिपियां इसमें मुख्य भूमिका निभाती हैं। इनमें हजारों साल पुराना ज्ञान है। लेकिन कई

भविष्य की संभावनाएँ: चुनौतियां और उम्मीदें

ज्ञान भारतम पोर्टल का भविष्य उज्ज्वल है। लेकिन चुनौतियां भी हैं। सबसे पहले, डिजिटाइजेशन में समय लगेगा। 1 करोड़ पांडुलिपियां। यह बड़ा काम है। फंडिंग चाहिए। सरकार ने बजट दिया, लेकिन और चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मदद ले सकते हैं। क्या यह वैश्विक हो जाएगा? लॉन्च से संस्थानों से सहयोग। जैसे गिलिगिट पांडुलिपियां। ये वापस लाई जा रही हैं। पोर्टल से शोध बढ़ेगा। नई किताबें लिखी जाएंगी। लेकिन डिजिटल डिवाइड। गांवों में इंटरनेट नहीं। सरकार को योजना बनानी चाहिए। लाइब्रेरी में कंप्यूटर लगाएं। साथ ही, साइबर सुरक्षा। डाटा योरी न हो। विशेषज्ञ इसमें काम कर रहे हैं। भविष्य में पोर्टल एप बन सकता है। मोबाइल पर आसान। वीआर से पांडुलिपियां देख सकेंगे। जैसे वास्तविक लगे। इससे पर्यटन बढ़ेगा। लोग संग्रहालय जाएंगे। समाज में जागरूकता आएगी। लोग अपनी पांडुलिपियां दान करेंगे। लेकिन निजता का मुद्दा। सरकार को पारदर्शी रहना पड़ेगा। सम्मेलन में नीतियां बनीं। कानूनी ढांचा। पुरानी लिपियां पढ़ने के लिए एआई। यह सब भविष्य को मजबूत करेगा। क्या इन तैयार हैं? शायद हाँ। यह पहल हमें सोचने पर मजबूत करती है कि तकनीक और परंपरा कैसे साथ घल सकती हैं। चुनौतियां हैं, लेकिन उम्मीद ज्यादा। पोर्टल से भारत ज्ञान का केंद्र बनेगा। दुनिया इनसे सीखेगी। कुल मिलाकर, यह एक संतुलित रास्ता है जहाँ अतीत भविष्य से मिलता है।

शिक्षा और समाज पर प्रभाव: ज्ञान सबके लिए

ज्ञान भारतम पोर्टल का शिक्षा पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। आज के स्कूलों में प्राचीन के लिए, इतिहास की क्लास में रामायण पढ़ सकते हैं। या विज्ञान में पुराने सूत्र। इससे शिक्षा रोचक बनेगी। शोधकर्ताओं के लिए तो खजाना है। वे नई खोज कर सकेंगे। समाज में भी बदलाव आएगा। लोग अपनी संस्कृति से जुड़ेंगे। गांव में रहने वाले भी। लेकिन इंटरनेट की कमी एक समस्या है। सरकार को गांवों में नेटवर्क बढ़ाना चाहिए। पोर्टल से रोजगार भी बढ़ेगे। डिजिटाइजेशन के लिए विशेषज्ञ चाहिए। संरक्षण केंद्रों में नौकरियां। युवा इसमें हिस्सा ले रहे हैं। क्या यह समाज को एकजुट करेगा? हाँ, क्योंकि ज्ञान साझा होगा। अमीर-गरीब सबको मिलेगा। लेकिन कुछ का कहना है कि डिजिटल से मूल भाव खो सकता है। हाथ से लिखी किताब का स्पर्श अलग है। यह सही है। इसलिए, संतुलन जरूरी। पोर्टल में वर्कशॉप और वेबिनार होंगे। लोग सीख सकेंगे। सम्मेलन में 3 दिन चर्चा हुई। 11 से 13 सितंबर तक। थीम थी भारत की ज्ञान विरासत को वापस लाना। विशेषज्ञों ने कहा कि एआई से तेज काम होगा। लेकिन मानवीय स्पर्श रहेगा। समाज में गर्व बढ़ेगा। हम कह सकेंगे कि हमारा ज्ञान दुनिया को दिया। जैसे जीरो का आविष्कार। या योग। पोर्टल से ये प्रमाणित होंगे। शिक्षा नीति में शामिल हो सकता है। बच्चे प्राचीन ग्रंथ पढ़ेंगे। इससे



तीज है देवी माँ का स्वरूप

तीज ज्ञान देवी का ही स्वरूप है। यदि इस दिन किए हुए पाठ को विधिपूर्वक उक्तीलन शादि से किया जाए तब ही यह देवी तीज प्रसन्न होती है। भारत की धर्ती पर दुर्गा माँ आई, शिव शाएँ और इहोंने मात्राब्रह्मर्थियों को पाठ प्रदान किया। भगवान शिव का कथन है कि एक बार सभी देवता देवी माँ के समीप गए और उनसे पूजा कि आप कोन हैं तब माँ ने कहा कि मैं ब्रह्म स्वरूप हूं, मुझसे ही सदूप और असदूप जगत उत्पन्न हुआ है। मैं आवंट और आनन्दरूप हूं। मैं विजय और अविजयारूप हूं। अवश्य जानें योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूं। पंचकृत और अपंचकृत शत्रुघ्नि भी मैं ही हूं। वेद और अवेद में हूं। विद्या और अविद्या भी मैं, अजा और अनजा भी मैं, नीये-उपर, अगल-बाहा भी मैं ही हूं। मैं रुद्रों और दसुओं के रूप में संवाद करती हूं। मैं आदियों और विद्य देवों के रूपों में फिरा करती हूं। मैं भिन्न और वरुण देवों का इब एवं अधिन का और दोनों अशिवी कुणरों का भरण-योग्य करती हूं। मैं सोन, लक्ष्मा, पूषा और भग को धारण करती हूं। त्रैलोक्य को आकाश करने के लिए दिस्तीर्ण यादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूं।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि जो साधक कृष्ण पाप की वार्दुर्शी और अशुभी को एकाग्रवित होकर उक्तीलन, शापोद्धार और परिशर करके पाठ करता है और भगवार्ती की सेवा में ग्रन्थान्वयन सर्वाय समर्पित कर देता है तो शिव फिर उसे प्रसाद रूप में वरण कर लेता है। उसी पर भगवार्ती प्रसन्न होती है श्रवण्या उसकी प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती है। इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबंधकरूप कील के द्वारा भगवान् जी ने इस स्तोत्र को कीरित कर रखा है। जो पूर्वोक्त रीति से निष्क्रीलन करके इस सप्तशती का प्रतीदिन स्पष्ट उत्त्वारणपूर्वक पाठ करता है, वह अनुच्छृणु में नहीं पड़ता तथा देह त्यागे के बाद नोक्ष प्राप्त कर लेता है। अतः कीलन को - जानकर उसका परिशर करके ही सप्तशती का पाठ आरंभ करें। जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का निवारण करते हुए कहा कि पाठ को कभी न छोड़ें और रस्ति में पाठ करें। किसी के साथ ठीक न करें। निरक्त वंद वाश का प्रयोग घर बहुन को करना चाहिए इससे अब्रेकों बीमारियां खल हो जाती हैं। यदि किसी को दिव्य अनुभव होता है तो किसी देवी-देवता के दर्शन स्वाज में गोते हैं तो वे किसी को न बताएं। सेवा कार्य करते रहना चाहिए। वृदावन में भगवान् श्री राधा कृष्ण का स्वर्ण नंदिर बन रहा है। वहाँ पर आप जाएं और सेवा कीजिए। वहाँ आपको अलौकिक अवृभूति गोंगी और शांति की प्राप्ति होती है।



समागम में परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने अवधान के माध्यम से श्रद्धालुओं को त्वरित दुख निवारण कृपा प्रदान की। प्रस्तुत है, है कुछ भाई-बहनों के अनुभव

मेडिकल साइंस छारान: अवधान के प्रभाव से सर्वाङ्गिक स्पार्टिलोसिस का दर्द नाश

एक बहन ने बताया कि इन्हें कई वर्षों से सर्वाङ्गिक स्पार्टिलोसिस की तकलीफ भी है। यह बीमारी अक्सर खराब बैठने की आदतों, लंबे समय तक शुके रहकर काम करने या उम्र बढ़ने से होने वाले हड्डियों और नसों के दबाव के कारण पैदा होती है। इसके चलते लगातार गर्दन का दर्द, चक्कर आना और हाथों-पैरों में झनझानाहट जैसी परेशानियां बनी होती हैं। लेकिन जब इन्होंने समागम में गुरुदेव जी द्वारा मां राधा कृष्ण जी का अवधान किया। तो इनका पुराना सर्वाङ्गिक दर्द पूरी तरह समाप्त हो गया और इन्हें गहरी राहत मिली। यह घटना चिकित्सा जगत के लिए किसी रहस्य से कम नहीं मानी जा सकती।

बहुत दिनों से नहीं लगी भूख, अवधान साधना से मिली राहत एक योहिला ने बताया कि उन्हें बहुत दिनों से ANOREXIA की गंभीर बीमारी थी। उन्हें भूख नहीं लग रही थी क्योंकि उनका पेट बहुत खराब था। इस वजह से उन्हें नींद भी नहीं आ रही थी, जिससे वे तनाव में थे। लगातार पेट की समस्या, मानसिक तनाव और नोंद की कमी ने उनकी भूख कम कर दी थी। इसके अलावा,

पाचन तंत्र की खराकी व पेट की गंभीर समस्या थी। लेकिन आज अवधान साधना के द्वारा उन्हें गहरी नींद आई और वे बिलकुल हल्की महसूस करने लगीं। इन्होंने कहा, अब इन्होंने तक भूख न लगाने और नींद न आने से मेरी सेहत बिंदु रही थी। आज परम पूज्य गुरुदेव जी ने जो मां राधा कृष्ण जी का अवधान करवाया है उससे मुझे मुझे भरपूर नींद मिली और मानसिक तनाव भी कम हो गया।

माराणा कृष्ण अवधान का अद्भुत प्रभाव, डिप्रेशन और हाई बीपी से मिली राहत

इन्होंने समागम में बताया कि वह लंबे समय से डिप्रेशन और हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से जूँड़ रहे थे। इसके कारण उन्हें लगातार चिंता, घबराहट और डाइजेरिस्टिव डिसऑर्डर जैसी दिक्कतें बनी रहती थीं। सामान्यतः डिप्रेशन मानसिक असंतुलन और तनाव से, जबकि हाई बीपी अनियमित जीवनशैली और चिंता से उत्पन्न होती है और दोनों मिलकर शरीर पर गंभीर प्रभाव डालते हैं। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से पूज्य गुरुजी ने जो समागम में भां राधा कृष्ण जी का अवधान करवाया। उसके करने से उन्हें

से दर्द कर रहा था। साथ ही कंधों में लगातार पीड़ा बनी हुई थी और आज तो कमर में भी असहनीय दर्द होने लगा था। इन सब कारणों से मानसिक तनाव भी बढ़ता जा रहा था। सामान्यतः इस प्रकार के दर्द मांसपेशियों की जड़न, पाचन तंत्र की गड़बड़ी या नसों पर दबाव के कारण उत्पन्न होते हैं और जीवन की दिनचर्या को बाधित कर देते हैं। गुरुदेव द्वारा समागम में मां राधा कृष्ण जी के अवधान को करने से यह दर्द पूरी तरह समाप्त हो गया और वे बिलकुल सामान्य महसूस करने लगे।

सिरदर्द व अनिद्रा की समस्या हुई पूरी तरह ठीक

एक भाई ने बताया कि उन्हें पिछले एक सत्राह से क्रान्तिक देक जी समस्या बनी हुई थी। लगातार सिरदर्द के कारण वे ठीक से नींद भी नहीं ले पा रहे थे, जिससे शक्ति नींद वाली बढ़ती जा रही थी। आम तौर पर सिरदर्द तनाव, माइग्रेन, नींद की कमी या नसों पर दबाव से उत्पन्न होता है और यह रोगी के मानसिक संतुलन को गहराई से प्रभावित करता है। समागम में मां राधा कृष्ण जी के अवधान से सिरदर्द पूरी तरह समाप्त हो गया है और अब वे गहरी शांति और सुकून का अनुभव कर रहे हैं।

भारत चौथे नंबर पर, पाकिस्तान टॉप-10 से बाहर जारी हुई सेनाओं की वैश्विक रैंकिंग



@ रिकू विश्वकर्मा

अख्य से लेकर यूरोप तक इन दिनों हालात सेनावपूर्ण बने हुए हैं। पोलैंड ने रूस पर ड्रोन हमले के आरोप लगाए हैं तो दूसरी ओर इजरायल ने कतर पर एयर स्ट्राइक कर दी है। ऐसे हालात में पूरी दुनिया की नज़र ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स 2025 पर रही, जो हाल ही में जारी किया गया। इस रिपोर्ट में दुनिया की 140 सेनाओं की ताकत का तुलनात्मक आकलन किया गया है नितीजों में एक बार फिर साफ हो गया कि अमेरिका आज भी दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य ताकत है। भारत ने चौथे स्थान हासिल किया है, जबकि पाकिस्तान टॉप-10 से बाहर हो गया है। यह रैंकिंग ऐसे वक्त में सामने आई है जब कई देशों ने रक्षा बजट और सैन्य आधुनिकीकरण पर अरबों डॉलर खर्च किए हैं।

अमेरिका का दबदबा बरकरार

रिपोर्ट में अमेरिका पहले स्थान पर है और उसके आगे किसी देश का टिक पाना मुश्किल लग रहा है। अमेरिका रक्षा पर दुनिया में सबसे ज्यादा खर्च करता है। उसके पास आधुनिक हथियारों का विशाल भंडार है। नाटो देशों और अरब समेत दुनिया के कई हिस्सों में फैले सैन्य अड्डे उसकी वैश्विक ताकत को दिखाते हैं।

अमेरिका की वायुसेना दुनिया की सबसे आधुनिक

मानी जाती है। नौसेना की ताकत और परमाणु हथियारों का जखीरा भी उसकी स्थिति को और मजबूत बनाते हैं। यही वजह है कि लगातार वर्षों से अमेरिका इस सूची में शीर्ष पर है।

रूस: आर्थिक दबाव के बावजूद दूसरी ताकत

रूस 2025 में भी दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सैन्य ताकत है। यूक्रेन युद्ध और पश्चिमी देशों के प्रतिवंधों के बावजूद रूस ने अपनी सैन्य शक्ति में कोई कमी नहीं आने दी है। उसके पास बड़ी संख्या में टैंक, मिसाइलें और जमीनी सेना है, जो उसे अन्य देशों से अलग करती है। रूस की सेना का आकार दुनिया में सबसे बड़ा है। उसके पास परमाणु हथियारों का विशाल भंडार है। हालांकि युद्ध ने उसकी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाया है, लेकिन ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स में उसकी स्थिति अब भी बेहद मजबूत है।

चीन एशिया की सबसे बड़ी शक्ति

तीसरे स्थान पर चीन है, जो एशिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति माना जाता है। पिछले दो दशकों में चीन ने रक्षा क्षेत्र में तेजी से निवेश किया है। उसकी नौसेना का आकार अब दुनिया में सबसे बड़ा हो चुका है और वायुसेना भी आधुनिक तकनीक से लैस है। दक्षिण चीन सागर, ताइवान और एशिया के अन्य क्षेत्रों में चीन की

बढ़ती सैन्य सक्रियता उसकी ताकत को साबित करती है। उसकी आक्रमक विदेश नीति और आर्थिक सामर्थ्य ने भी उसकी सेना को मजबूत किया है।

भारत चौथे स्थान पर स्थिर

ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स में भारत चौथे स्थान पर है। भारत के पास दुनिया की सबसे बड़ी स्थायी सेनाओं में से एक है। लगातार बढ़ते रक्षा बजट और स्वदेशी हथियारों के निर्माण पर जोर देने की नीति ने भारत की ताकत में इजाफा किया है।

भारत की ताकत सिर्फ जमीनी सेना तक सीमित नहीं है। वायुसेना में राफेल जैसे आधुनिक लड़ाकू विमान और नौसेना में विमानवाहक पोत उसकी शक्ति को और बढ़ाते हैं। भारत का परमाणु कार्यक्रम और मिसाइल क्षमता भी उसे दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में शामिल करती है।

दक्षिण कोरिया से लेकर इटली तक

पाँचवें नंबर पर दक्षिण कोरिया है, जिसने बीते कुछ वर्षों में अपनी सैन्य ताकत को तेजी से आधुनिक बनाया है। छठे स्थान पर यूके, सातवें पर फ्रांस, आठवें पर जापान, नौवें पर तुर्की और दसवें पर इटली है। यह सभी देश न केवल अपनी सेना पर भारी निवेश कर रहे हैं बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

पाकिस्तान का फिसलना और झरायल की स्थिति

2024 में पाकिस्तान टॉप-10 में नौवें स्थान पर था। लेकिन 2025 की रैंकिंग में वह फिसलकर 12वें स्थान पर पहुँच गया है। आर्थिक संकट और आंतरिक अस्थिरता के चलते उसकी स्थिति कमजोर हुई है। वहीं हालिया महीनों में सुर्खियों में रहे ईरान को 16वां स्थान मिला है। इजरायल, जिसने हाल ही में कतर पर एयर स्ट्राइक की, वह इस सूची में 15वें स्थान पर है।

क्षेत्रीय होती है ताकत

ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स सिर्फ हथियारों की संख्या पर नहीं, बल्कि कई कारकों पर आधारित होता है। किसी देश का रक्षा बजट, तकनीकी क्षमता, सैनिकों की संख्या, हथियारों की विविधता और वैश्विक पहुँच जैसे पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है। हाल के वर्षों में दुनियाभर की सरकारें सैन्य आधुनिकीकरण पर अरबों डॉलर खर्च कर रही हैं। एआई तकनीक, साइबर वॉरफेर और स्पेस डिफेंस जैसे नए क्षेत्रों में निवेश ने भी देशों की ताकत को प्रभावित किया है। ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स 2025 यह दिखाता है कि अमेरिका, रूस और चीन जैसी बड़ी ताकतें अब भी शीर्ष पर हैं। भारत चौथे स्थान पर रहते हुए टॉप-5 में बना हुआ है, जो उसकी बढ़ती वैश्विक भूमिका का संकेत है। वहीं पाकिस्तान का टॉप-10 से बाहर होना उसकी चुनौतियों को दर्शाता है।

राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क

भा

या संवाद संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मनुष्य को इसलिए भी परमात्मा की श्रेष्ठ कृति कहा जाता है कि वह भाषा का उपयोग कर अपने भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। यही विशेषता है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है।

हिंदी एक बहुआयामी भाषा है। यह बात इसके प्रयोग क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए भी समझी जा सकती है। यह अलग बात है कि हिंदी भाषा की बात करते समय हम सामान्यतः हिंदी साहित्य की बात करने लगते हैं। इसमें संदेह नहीं कि साहित्यिक हिंदी, हिंदी के विभिन्न आयामों में से एक है, लेकिन यह केवल हिंदी के एक बड़े मानचित्र का छोटा-सा हिस्सा है, शेष आयामों पर कम विचार हुआ है और व्यावहारिक हिंदी की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए तो और भी कम विमर्श हमारे सामने हैं। यदि हिंदी भाषा के आंतरिक इतिहास का उद्घाटन करना हो तो नामकरण ही उसका आधार बन सकता है। हिंदी, हिंदवी, हिन्दुई और दकिनी के विकास क्रम में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अलग-अलग समय में एक ही भाषा के भिन्न नाम प्रचलित रहे हैं। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी में होते रहे हों, लेकिन संपूर्ण राष्ट्र में आपसी संपर्क, संवाद, संचार, विचार, विमर्श, जीवन और व्यवहार का माध्यम हिंदी ही रही है।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क किया और सफलता हासिल की। इसी कारण आजादी के पश्चात संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिंदी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय किया था। जैसे-जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है, वो भाषा उतने ही अलग-अलग रूप में विकसित होना शुरू हो जाती है, यही हिंदी भाषा के साथ हुआ, क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित थी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसे जगह मिली, और फिर समाचार-पत्रों में 'हिंदी पत्रकारिता' का विकास हुआ। अपनी अनवरत यात्रा के कारण स्वतन्त्रता के बाद हिंदी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और हिंदी का एक राजभाषा का रूप विकसित हुआ।

260 से ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है

अगर हम आंकड़ों में हिंदी की बात करें तो 260 से ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। 64 करोड़ लोगों की हिंदी मातृभाषा है। 24 करोड़ लोगों की दूसरी और 42 करोड़ लोगों की तीसरी भाषा हिंदी है। इस धरती पर 1 अरब 30 करोड़ लोग हिंदी बोलने और समझने में सक्षम हैं। 2030 तक दुनिया का हर पांचवा व्यक्ति हिंदी बोलेगा। यूरेंजी और फिजी जैसे देशों में हिंदी को तीसरी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिंदी की देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है, ऑक्सफोर्ड डिक्षानरी



में 18 हजार शब्द हिंदी के शामिल हुए हैं, और सबसे बड़ी बात कि जो तीन साल पहले अंग्रेजी इंटरनेट की सबसे बड़ी भाषा थी, अब हिंदी ने उसे पीछे छोड़ दिया है। गूगल सर्वेक्षण बताता है कि इंटरनेट पर डिजिटल दुनिया में हिंदी सबसे बड़ी भाषा है।

राजभाषा का दर्जा

अक्सर ये प्रश्न पूछा जाता है कि हिंदी ही हमारी राजभाषा क्यों? इसका जवाब बहुत पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिया था। महात्मा गांधी ने किसी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिये जाने के लिए तीन लक्षण बताए थे। पहला कि वो भाषा आसान होनी चाहिए। दूसरा प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए। और तीसरा उस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए। अगर ये तीनों लक्षण किसी भाषा में थे, हैं और रहें, तो वो सिर्फ हिंदी भाषा ही है। आज भाषा को लेकर संवेदनशील और गंभीरतापूर्वक विचार करने की

आवश्यकता है। इस सवाल पर भी सोचना चाहिए कि क्या अंग्रेजी का कद करके ही हिंदी का गौरव बढ़ाया जा सकता है? जो हिंदी कवीर, तुलसी, रैदास, नानक, जायसी और मीरा के भजनों से होती हुई प्रेमचंद, प्रसाद, पंत और निराला को बांधती हुई, भारतेंदु हरिश्चन्द्र तक सरिता की भाँति कलकल बहती रही, आज उसके मार्ग में अटकले क्यों हैं?

प्रवार-प्रसार को बढ़ावा

यदि हम सच में चाहते हैं कि हिंदी भाषा का प्रभुत्व राजभाषा के रूप में बना रहे, तो हमें इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी। ऐसे में भरोसा फिर उन्हीं नौजवानों का करना होगा, जो एक नए भारत के निर्माण के लिए तैयार हैं। जो अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहते हैं। भरोसे और आत्मविश्वास से दमकते ऐसे तमाम चेहरों का इंतजार भारत कर रहा है। ऐसे चेहरे, जो भारत की

बात भारत की भाषाओं में करेंगे। जो अंग्रेजी में दक्ष होंगे, किंतु अपनी भाषाओं को लेकर गर्व से भरे होंगे। उनमें 'एचएमटी' यानी 'हिंदी मीडियम टाइप' या 'वर्नाकुलर पर्सन' कहे जाने पर हीनता पैदा नहीं होगी, बल्कि वे अपनी भाषा से और अपने काम से लोगों का और दुनिया का भरोसा जीतेंगे। हिंदी और भारतीय भाषाओं के इस समय में देश ऐसे युवाओं का इंतजार करते हैं, जो अपनी भारतीयता को उसकी भाषा, उसकी परंपरा, उसकी संस्कृति के साथ समग्रता में स्वीकार करेंगे। जिनके लिए परंपरा और संस्कृति एक बोझ नहीं, बल्कि गौरव का कारण होगी। यह नौजवानी आज कई क्षेत्रों में सक्रिय दिखती है। खासकर सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में। जिन्होंने इस भ्रम को तोड़ दिया, कि सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में बिना अंग्रेजी के गुजारा नहीं है। ये लोग ही हमें भरोसा जागा रहे हैं। ये भारत को भी जगा रहे हैं। आज भरोसा जागा रहे हैं। ये भारत को भी जगा रहे हैं। आज भरोसा जागा रहे हैं। ये भारत को भी जगा रहे हैं।

सी.पी. राधाकृष्णन बने उपराष्ट्रपति: एक नई शुरुआत

भारत की राजनीति में कभी-कभी ऐसे पल आते हैं जो सबको सोचने पर मजबूत कर देते हैं।

जब सितंबर 9, 2025 को ऐसा ही एक दिन था जब सी.पी. राधाकृष्णन को भारत का 15वां उपराष्ट्रपति चुना गया। यह एक विशेष चुनाव था क्योंकि पहले के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दे दिया था। राष्ट्रपति द्वापदी मुर्मू ने उन्हें शपथ दिलाई। यह घटना एनडीए की ताकत को और मजबूत करती है और संसद में नेतृत्व की निरंतरता सुनिश्चित करती है। आम भारतीयों के लिए यह लोकतंत्र का मजबूती का संकेत है, लेकिन साथ ही राष्ट्रीय चुनौतियों के बीच विधायी प्राथमिकताओं में बदलाव की संभावना भी।

यह चुनाव क्यों हुआ? जगदीप धनखड़ ने जुलाई 21, 2025 को स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा दिया। उन्होंने राष्ट्रपति को पत्र लिखा कि वे स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहते हैं और डॉक्टरों की सलाह मानना जरूरी है। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि इसके पीछे राजनीतिक वजहें भी हो सकती हैं। जैसे कि संसद में विपक्ष के साथ तनाव या अन्य मुद्दे। सरकार कहती है कि यह सिर्फ स्वास्थ्य की बात है और इसमें ज्यादा न खींचा जाए। विपक्ष ने कहा कि इसीके के पीछे गहरी वजहें हैं, लेकिन कोई ठोस सबूत नहीं दिए। यह सब देखकर सोचने वाली बात है कि राजनीति में स्वास्थ्य और दबाव के बीच का रिश्ता क्या है?

सी.पी. राधाकृष्णन तमिलनाडु से हैं और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के वरिष्ठ नेता। उनका पूरा नाम चंद्रपुरम पोनुसामी राधाकृष्णन है। वे एनडीए के उम्मीदवार थे। विपक्षी गठबंधन इंडिया के उम्मीदवार बी. सुधर्शन रेड़ी थे। चुनाव में 781 संसदीयों को वोट डालने का हक था। इनमें से 767 ने वोट दिए और 15 वोट अमान्य हो गए। राधाकृष्णन को 452 वोट मिले, जो कुल वैध वोटों का 60.1 प्रतिशत है। सुधर्शन रेड़ी को 300 वोट मिले। अंतर 152 वोटों का था। यह जीत एनडीए की एक जुटाए दिखाती है। कई पार्टियां जैसे जेडीयू, एनसीपी, टीडीपी, शिवसेना और यहां तक कि गैर-एनडीए वाली एआईएडीएमके और वाईएसआरसीपी ने भी समर्थन दिया।

शपथ समारोह सितंबर 12, 2025 को हुआ। राष्ट्रपति द्वापदी मुर्मू ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। अब वे राज्यसभा के अध्यक्ष भी हैं। यह पद महत्वपूर्ण है क्योंकि उपराष्ट्रपति संसद के ऊपरी सदन को चलाते हैं। उनके आने से संसद में बहसें कैसे होंगी, यह देखना दिलचस्प होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई दी और कहा कि यह राष्ट्रवादी विचारधारा की जीत है। राधाकृष्णन ने भी कहा कि वे देश के विकास के लिए काम करेंगे। लेकिन विपक्ष का कहना है कि यह बीजेपी की हावी होने की कोशिश है। क्या यह लोकतंत्र को मजबूत करेगा या असंतुलन पैदा करेगा? यह समय बताएगा।

कोन हैं सी.पी. राधाकृष्णन?

सी.पी. राधाकृष्णन एक साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं, लेकिन उनकी राजनीतिक यात्रा लंबी और रोचक है। उनका जन्म मई 4, 1957 को तमिलनाडु के तिरुपुर में हुआ। पिता का नाम सी.के. पोनुसामी और मां का नाम के। जानकी था। उन्होंने वी.ओ. चिंदंबरम कॉलेज, थूथुकुड़ी से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातक किया। बचपन में वे टेबल टेनिस खेलते थे। लेकिन राजनीति में रुचि जल्दी आ गई। 16 साल की उम्र में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ



(आरएसएस) और भारतीय जन संघ से जुड़े। 1980 में जब बीजेपी बनी, तो वे उसके सदस्य बन गए।

उनकी राजनीतिक शुरुआत 1974 में हुई जब वे जन संघ की तमिलनाडु राज्य कार्यकारी समिति में चुने गए। वे कोवयंबद्दूर से लोकसभा संसद रहे। 1998 और 1999 में चुनाव जीते, लेकिन 2004, 2014 और 2019 में हार गए। संसद में वे सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों और वित्त समिति में रहे। 2003 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 58वें सत्र को संबोधित किया। यह उनके लिए बड़ी उपलब्धि थी। 2003 से 2006 तक वे तमिलनाडु बीजेपी के राज्य अध्यक्ष रहे। उस दौरान उन्होंने 93 दिनों की रथ यात्रा की। इसमें नदियों को जोड़ने, छुआछूत मिटाने और आतंकवाद के खिलाफ जागरूकता फैलाई।

राधाकृष्णन ने कई पद संभाले। 2016 से 2020 तक वे भारत के कोर्यो बोर्ड के अध्यक्ष रहे। यह नारियल उद्योग से जुड़ा है। फरवरी 2023 से जुलाई 2024 तक झारखंड के राज्यपाल रहे। 2024 में कुछ समय के लिए तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के लेपिटेनेंट गवर्नर का अतिरिक्त प्रभार संभाला। फिर जुलाई 2024 से सितंबर 2025 तक महाराष्ट्र के राज्यपाल रहे। बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति में भी वे सदस्य हैं।

उनकी जिंदगी में कुछ विवाद भी रहे। 2012 में उन्होंने एक आरएसएस कार्यकर्ता पर हमले के खिलाफ प्रदर्शन किया और गिरफ्तारी दी। डीएमके ने उनकी रथ यात्रा की आलोचना की। लेकिन वे हमेशा राष्ट्रवादी विचारों पर अड़े रहे। अब उपराष्ट्रपति बनकर वे देश की सेवा करेंगे। उनकी दक्षिण भारत की पृष्ठभूमि बीजेपी को वहां मजबूत करने में मदद कर सकती है। क्या उनका अनुभव संसद को बेहतर बनाएगा? या पुराने विवाद असर डालेंगे? यह सोचने लायक है। वे एक साधारण परिवार से हैं, इसलिए आम लोग उनसे जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। उनकी कहानी बताती है कि मेहनत से ऊंचे पद तक पहुंचा जा सकता है।

विशेष चुनाव की कहानी

उपराष्ट्रपति का चुनाव सामान्य नहीं था। यह एक विशेष चुनाव था क्योंकि जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दे

यह घटना राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। एनडीए की स्थिति मजबूत हुई क्योंकि उपराष्ट्रपति का पद उनके पास रहा। राज्यसभा में बहुमत न होने पर भी अध्यक्ष का फैसला अहम होता है। जैसे कि वोट बाबर होने पर उनका वोट। राधाकृष्णन का अनुभव यहां काम आएगा। वे दक्षिण से हैं, इसलिए बीजेपी की दक्षिण भारत में पहुंच बढ़ सकती है। तमिलनाडु में बीजेपी कमज़ोर है, लेकिन उनका पद मदद कर सकता है।

विपक्ष का नजरिया अलग है। वे कहते हैं कि यह बीजेपी की एक और जीत है, लेकिन लोकतंत्र में संतुलन जरूरी है। धनखड़ के समय संसद में काफी बहस हुई, कभी-कभी तीखी। अब राधाकृष्णन कैसे सदन चलाएंगे? वे कहते हैं कि निष्पक्ष रहेंगे और विकास पर फोकस करेंगे। लेकिन व्या विपक्ष को पर्याप्त मौका मिलेगा? यह विचारणीय है। यह घटना राष्ट्रीय चुनौतियों जैसे बेरोजगारी, महंगाई और जलवायु परिवर्तन के बीच हुई। उपराष्ट्रपति का पद इन मुद्दों पर बहस को प्रभावित कर सकता है। व्या इससे विधेयक जल्दी पास होंगे या रुकावटे आएंगी? समय बताएगा। यह सब मिलाकर लोकतंत्र की स्थिरता दिखाता है, लेकिन बदलाव की संभावना भी।

आगे वाले दिनों में व्या बदलेगा?

सी.पी. राधाकृष्णन के उपराष्ट्रपति बनने से राजनीति में क्या असर पड़ेगा? सबसे पहले, एनडीए मजबूत हुआ। 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला, लेकिन गठबंधन से सरकार बनी। अब उपराष्ट्रपति का पद उनके पास रहने से संसद में आसानी होगी। महत्वपूर्ण बिल जैसे संविधान संशोधन या आर्थिक सुधार आसानी से पास हो सकते हैं।

दूसरी तरफ, विपक्ष मजबूत हो रहा है। इंडिया गठबंधन ने चुनाव लड़ा, भले हार गया। वे कहते हैं कि यह चुनाव लोकतंत्र की परीक्षा था। राधाकृष्णन ने कहा कि यह राष्ट्रवादी विचार की जीत है। लेकिन व्या राष्ट्रवाद असर पहले है। लेकिन व्या राष्ट्रवाद सबको साथ लेगा या विभाजन करेगा? दक्षिण भारत में बीजेपी की छिप सुधारने का मौका है। तमिलनाडु जैसे राज्य में जहां डीएमके मजबूत है, राधाकृष्णन का पद फायदा दे सकता है।

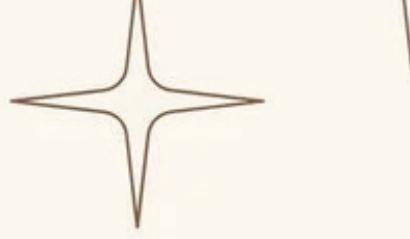
संसद की कार्यवाही पर असर पड़ेगा। धनखड़ के समय विपक्ष ने शिकायत की कि उन्हें बोलने नहीं दिया जाता। अब राधाकृष्णन नया तरीका अपनाएंगे? वे अनुभवी हैं, राज्यपाल रह चुके हैं। शायद सदन को शांतिपूर्ण चलाएं। लेकिन चुनौतियां हैं। जैसे कि राज्यसभा में नामांकित सदस्य या विशेषाधिकार।

राष्ट्रीय स्तर पर यह स्थिरता का संकेत है। इसीके के बाद जल्दी चुनाव और शपथ से सिस्टम की मजबूती दिखी। लेकिन स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा देने वाले धनखड़ अब व्या करेंगे? वे सार्वजनिक जीवन में दिखे हैं, लेकिन राजनीति से दूर। यह सब मिलाकर एक दिलचस्प कहानी है।

शपथ और राजनीतिक महत्व

शपथ समारोह सितंबर 12, 2025 को राष्ट्रपति भवन में हुआ। राष्ट्रपति द्वापदी मुर्मू ने सी.पी. राधाकृष्णन को पद की शपथ दिलाई। यह एक सादा लेकिन गरिमामय कार्यक्रम था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कई मंत्री और संसद मौजूद थे। शपथ में उन्होंने संविधान की रक्षा करने का वचन लिया। अब वे उपराष्ट्रपति के साथ राज्यसभा के अध्यक्ष हैं।

कुल मिलाकर, यह घटना भारत के लोकतंत्र को मजबूत करती है। लेकिन संतुलन बनाए रखना जरूरी। क्या इससे विधायी प्राथमिकताएं बदलेंगी? जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य या पर्यावरण पर फोकस। या राजनीतिक खेल जारी रहेगा? यह सब विचार करने लायक है। राधाकृष्णन की भूमिका आने वाले समय में साफ होगी। वे देश के लिए काम करेंगे, यह उम्मीद है। लेकिन विपक्ष की आवाज भी सुनी जानी चाहिए। यह लोकतंत्र का मूल है।



जिंदगी का सफर है ये कैसा सफर



याद करो
वो बघपन

चशमुल्ली, भौंदू, डरपोक...
याद करो

वो सुबह और वो रात
जब झड़े बालों वाले, मरियल बीमार कुते सरीखा

बार-बार दुल्कारा उब्लोंने तुम्हें अपनी जिंदगी की
चौखट से
याद करो

वो दिन
जब आल्महत्या के गुणने पर खड़े तुम

अपने केफ़ड़ों में जने दुःख के बर्फ़ को
पिघलाने के लिए फूँक रहे थे सस्ती सिगरेट

याद करो
वो सघ

जो एक उदास-जुआरी ने बताया था तुम्हें
कि जिसके दिल में गहराई होती है

इस धरती पर बेल्ड उदासी ही उसका नसीब है
याद करो

वो झूठ
जो किसी के आहत भर से चटक गया था

कि इस ग्रह की माटी में नर्ही रिवलता खेलना का
फूल
याद करो

वो पल
पहली बार हुआ था एहसास तुम्हें

कि खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार...
...और जो कुछ भी कर सकते हो याद, करो।

परंतु अंत में करना याद
वो उम्मीद

कि एक सुबह तुम सोकर उठोगे
और उसका घेरा होगा सामने तुम्हारे

जिसने तुम्हारे किराया ना भरने पर भी
नहीं कराया खाली तुमसे अपने दिल का कमरा

कि मेरे दोस्त!
जिंदगी की गाड़ी

उम्मीद के ढीजल से चलती है।

जीवित रहने के लिए

कभी-कभी भरी दुपहरी बाबा को सोता देख
भाग जाना चाहिए घुपके से आम की बगिया में,

कभी-कभी बेसिन में पलट देना चाहिए टूथ का गिलास,
स्कूल की चालादीवारी फाँद फिल देखने जाना

बुरा होता होगा तो हो पर कभी-कभी कर लेना चाहिए ये भी
कभी-कभी महज इसलिए भी देखने चाहिए सपने

कि साँस लेती रहे सपनों के पूरे होने की उम्मीद
प्रेम को बघाए रखने के लिए भी कभी-कभार

विरह की फटी चादर ओढ़ कर लेना चाहिए प्रेम
रो लेना चाहिए बेवजह आधी रात भी कभी

आरियर तकियों-बिछौनों को भी तो
आपस में फुसफुसाने के लिए चाहिए न कहानी कोई।

कभी-कभार
केवल इस लिए भी लिख लेनी चाहिए कविता

कि ठहर कर ज़र्हीला ना हो जाए कहीं
दिल के तालाब में दुःख का यानी।

आसित आदित्य
नई पीढ़ी के कवि-तेखक और अनुवादक।



सुप्रीम कोर्ट की सख्ती, हाथियों की कैद पर SIT जांच

हाथियों की कैद का सच बताएगी SIT

@ मनीष पांडेय

भारत में पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण से जुड़ा हर मुद्दा हमेशा संवेदनशील और व्यापक असर वाला होता है। हाल ही में गुजरात के जामनगर स्थित वनतारा वन्यजीव केंद्र को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक अहम सुनवाई चल रही है। मामला हाथियों की कथित अवैध कैद और वन्यजीवों के संदिग्ध हस्तांतरण से जुड़ा है। इस मामले ने न केवल पशु अधिकार कार्यकर्ताओं बल्कि पूरे देश का ध्यान खींचा है।

सुनवाई फिर से शुरू, सुप्रीम कोर्ट की सख्ती

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर फिर से सुनवाई शुरू की। जस्टिस पंकज मित्तल और जस्टिस प्रसन्न बी. वराले की पीठ ने इस मामले को बेहद गंभीर मानते हुए पहले ही एक विशेष जांच दल (SIT) के गठन का आदेश दिया था। अदालत का साफ कहना है कि यह जांच केवल सतहीं तौर पर नहीं बल्कि गहराई से होनी चाहिए ताकि सच सामने आ सके। 25 अगस्त को दिए आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि आरोप केवल वनतारा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें वैद्यानिक प्राधिकरणों और यहां तक कि अदालतों पर भी संदेह जताया गया है। यही कारण है कि एक निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच जरूरी है।

कोन-कोन हैं SIT में शामिल?

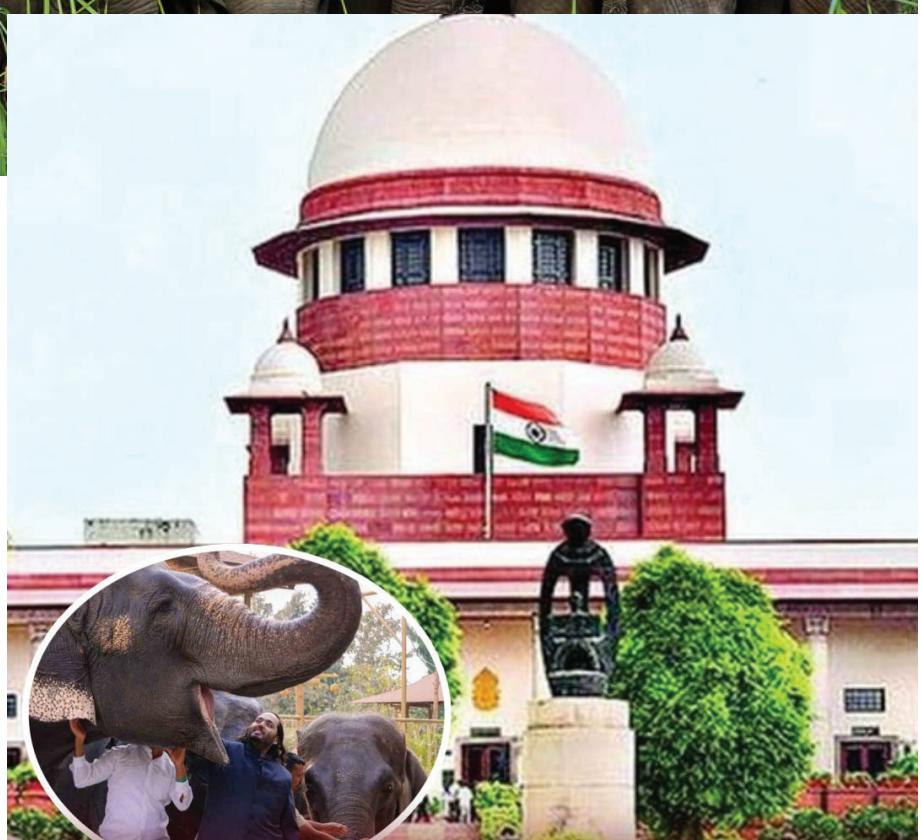
इस मामले की गंभीरता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि सुप्रीम कोर्ट ने इसमें अत्यंत अनुभवी और प्रतिष्ठित हस्तियों को शामिल किया है सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त जस्टिस जस्टी चेलमेश्वर। उत्तराखण्ड और तेलंगाना उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस राधवेंद्र चौहान मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त हेमंत नागराले। वरिष्ठ आईआरएस अधिकारी अनिश गुप्ता। इन नामों से स्पष्ट है कि जांच दल सिर्फ कानूनी ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक और पुलिस स्तर पर भी व्यापक दृष्टिकोण अपनाएगा।

तथ्य खोजना, आरोप नहीं लगाना

पीठ ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह प्रक्रिया किसी भी संस्था या प्राधिकरण को दोषी ठहराने के लिए नहीं है। इसे केवल एक 'फैट-फाइंडिंग मिशन' के तौर पर देखा जाए। अदालत का कहना है कि जांच का मकसद सिर्फ यह पता लगाना है कि कहीं वन्यजीव संरक्षण कानूनों का उल्लंघन तो नहीं हुआ और अगर हुआ है तो किस स्तर पर जिम्मेदारी तय की जा सकती है।

रिपोर्ट और बंद लिफाफा

सुप्रीम कोर्ट ने SIT से कहा था कि वह 12 सितंबर तक अपनी रिपोर्ट सौंपें। इसके बाद SIT ने अपनी रिपोर्ट एक बंद लिफाफे में सुप्रीम कोर्ट को दी। बताया गया है कि रिपोर्ट के साथ एक पेन ड्राइव भी शामिल है, जिसमें संभवतः साक्ष्य और डिजिटल सामग्री मौजूद है। अदालत



इसे राष्ट्रीय हित और संवैधानिक दायित्व के तहत भी परखा जाएगा। अदालत ने यह भी जताया कि अगर किसी भी स्तर पर गड़बड़ी पाई जाती है, तो जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। अब सबकी नजरें SIT की रिपोर्ट पर हैं। इसमें क्या खुलासे होते हैं और सुप्रीम कोर्ट आगे क्या कदम उठाता है, यह आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा। लेकिन इतना तय है कि यह मामला केवल वनतारा तक सीमित नहीं रहेगा। इसके जरिए पूरे

देश में वन्यजीव संरक्षण और अवैध कैद जैसे मामलों पर कड़ी निगरानी और कानूनी सख्ती की राह खुल सकती है। भारत ने हमेशा प्रकृति और वन्यजीवों को सम्मान दिया है। लेकिन अगर किसी कारणवश कानूनों की अनदेखी हो रही है, तो अदालत का हस्तक्षेप जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट का यह कदम न केवल हाथियों की सुरक्षा के लिए बल्कि पूरे वन्यजीव संरक्षण अंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी की दो साल बाद मणिपुर यात्रा शांति की नई किरण

मणिपुर राज्य में पिछले दो साल से जातीय तनाव चल रहा है। मई 2023 से शुरू हुई हिंसा में 260 से ज्यादा लोग मारे गए और 60,000 से अधिक लोग बेघर हो गए। इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 सितंबर 2025 को मणिपुर का दौरा किया। यह उनकी दो साल बाद पहली यात्रा थी। यात्रा से पहले कुछ जगहों पर हिंसा हुई, जैसे पोस्टर फाइना और सजावट तोड़ना। यह दौरा भारतीय लोगों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उत्तर-पूर्वी इलाके में स्थिरता, जातीय सुलह और विकास पर केंद्र सरकार का ध्यान फिर से जाता दिखता है। लेकिन क्या यह सिर्फ एक यात्रा है या असली बदलाव की शुरुआत?

यात्रा की पृष्ठभूमि: पुरानी समस्याएं और नई उम्मीदें

मणिपुर में मेहती और कुकी समुदायों के बीच तनाव लंबे समय से है। मेहती लोग घाटी में रहते हैं और कुकी लोग पहाड़ी इलाकों में। मई 2023 में हिंसा भड़क उठी, जिसमें जमीन और नौकरियों को लेकर झगड़े हुए। इस हिंसा ने राज्य को बांट दिया। लोग शिविरों में रहने को मजबूर हो गए। केंद्र सरकार ने फरवरी 2025 में राज्यपाल के जरिए सीधा शासन शुरू किया, क्योंकि तत्कालीन मुख्यमंत्री एन. बिरेन सिंह को इस्तीफा देना पड़ा।

प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा ऐसे समय में हुई जब राज्य में शांति की जरूरत सबसे ज्यादा है। वे आखिरी बार 2022 में मणिपुर गए थे। दो साल बाद यह दौरा आया। यात्रा से पहले चुराचंदपुर में तनाव हुआ। स्थानीय लोगों ने प्रधानमंत्री की यात्रा के लिए लगाई गई सजावट तोड़ दी और पोस्टर फाड़ दिए। पुलिस से झड़प भी हुई। यह दिखाता है कि कुछ लोग अभी भी नाराज हैं। क्या वजह थी? शायद पुरानी शिकायतें, जैसे सरकार का दरे से ध्यान देना। लेकिन कई लोग उम्मीद कर रहे थे कि यह यात्रा शांति लाएगी।

उत्तर-पूर्वी राज्य भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां विकास हो तो पूरे देश को फायदा। लेकिन तनाव से अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। मोदी की यात्रा ने दिखाया कि केंद्र सरकार अब सक्रिय है। उन्होंने मिजोरम से शुरू करके मणिपुर पहुंचे। मौसम खराब होने से हेलीकॉप्टर की बजाय सड़क से गए। रास्ते में जले हुए घर और टूटा पुल देखा, जो 2023 की हिंसा की याद दिलाता है। यह यात्रा सिर्फ एक दिन की थी, लेकिन इसका असर लंबा हो सकता है। सोचिए, अगर शांति आए तो कितने लोग घर लौट सकेंगे। लेकिन क्या सिर्फ एक यात्रा से सब ठीक हो जाएगा? यह सवाल विचार करने लायक है।

यात्रा का दिन: चुराचंदपुर से इम्फाल तक

13 सितंबर 2025 को प्रधानमंत्री मोदी मिजोरम से इम्फाल एयरपोर्ट पहुंचे। वहां से वे सड़क मार्ग से चुराचंदपुर गए, जो कुकी बहुल इलाका है। मौसम की वजह से हेलीकॉप्टर नहीं उड़ा। रास्ते में लोग तिरंगा



लहराते नजर आए। बच्चे स्कूल से आकर स्वागत कर रहे थे। चुराचंदपुर में उन्होंने पीस ग्राउंड पर विस्थापित लोगों से मुलाकात की। लोग रो पड़े, अपनी समस्याएं बताईं। मोदी ने कहा, “मैं आपके साथ हूं। भारत सरकार मणिपुर के लोगों के साथ हैं।”

फिर वे भाषण दिए। चुराचंदपुर में बोले कि मणिपुर प्रकृति का उपहार है। हिंसा दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने सभी संगठनों से शांति का गस्ता अपनाने की अपील की। कहा, “अपने सपनों को पूरा करने और बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए शांति का मार्ग चुनें।” पहाड़ और घाटी के बीच भाईचारे का पुल मजबूत करने पर जोर दिया। विस्थापितों से कहा कि नई सुबह की उम्मीद है।

इसके बाद वे इम्फाल लौटे, जो मेहती बहुत है। कांगला फोर्ट में कार्यक्रम हुआ। वहां भी भाषण दिया। मणिपुर को भारत का मुकुट जड़ित रत्न कहा। कहा कि 21वीं सदी उत्तर-पूर्व की है। नेपाली अंतरिम प्रधानमंत्री सुशीला जी को बधाई दी। मणिपुर की आजादी की लड़ाई में भूमिका बताई। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जिक्र किया। कहा कि मणिपुर भारत की आजादी का द्वार है। सुरक्षा कड़ी थी। ड्रोन पर रोक थी। पूरे राज्य में केंद्रीय और राज्य बल तैनात थे। यह यात्रा दिखाती है कि सरकार दोनों समुदायों से बात करना चाहती है। लेकिन क्या यह काफी है? दोनों तरफ से बातचीत बढ़ेगी या नहीं, यह देखना बाकी है।

विकास परियोजनाएं: नई सड़कें, नए घर

यात्रा के दौरान मोदी ने कई परियोजनाओं का उद्घाटन किया। चुराचंदपुर में 7,300 करोड़ रुपये की विस्थापित लोग भावुक हो गए। एक निवासी ने कहा कि यात्रा से विकास की उम्मीद है। राज्यपाल अजय कुमार

ज्यादा की परियोजनाएं शुरू कीं। इसमें मणिपुर अर्बन रोड प्रोजेक्ट शामिल है, जिसकी कीमत 3,600 करोड़ रुपये है। मणिपुर इंफ्राट्रेक डेवलपमेंट प्रोजेक्ट 500 करोड़ का है। महिलाओं के लिए हॉस्टल, इंडोर स्टेडियम, सड़कें और राष्ट्रीय राजमार्ग शामिल हैं।

विस्थापित परिवारों के लिए 7,000 नए घर बनाने की मदद का एलान किया। राज्य के लिए 3,000 करोड़ का स्पेशल पैकेज और विस्थापितों के लिए 500 करोड़ का व्यवस्था। जीएसटी में कटौती से रोजमर्हा की चीजें सस्ती होंगी। इससे पर्यटन बढ़ेगा, गेस्ट हाउस और टैक्सी बाले फायदे में रहेंगे। मोदी ने कहा कि 2014 से रेलवे और सड़कों का बजट बढ़ा है। मणिपुर में पहला नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनेगा।

ये परियोजनाएं विकास की दिशा दिखाती हैं। सड़कें अच्छी होंगी तो व्यापार बढ़ेगा। घर मिलेंगे तो लोग शिविर छोड़कर लौटेंगे। लेकिन सवाल है, क्या हिंसा के बिना विकास संभव है? अगर शांति नहीं आई तो ये परियोजनाएं कितनी कामयाब होंगी? यह विचार करने की बात है। सरकार का प्रयास अच्छा है, लेकिन जमीन पर अमल जरूरी। उत्तर-पूर्व में कनेक्टिविटी बढ़ेगी तो रोजगार मिलेगा। युवाओं के लिए आईटी प्रोजेक्ट उपयोगी। लेकिन स्थानीय लोगों की भागीदारी होनी चाहिए।

लोगों की आवाजें: खुशी और आलोचना दोनों

यात्रा पर प्रतिक्रियाएं मिली-जुली रहीं। चुराचंदपुर में स्थानीय लोगों ने मोदी का स्वागत किया। जोमी और थाडो कुकी शॉल पहनाए। एक छोटी लड़की ने पोटेटो दिया। विस्थापित लोग भावुक हो गए। एक निवासी ने कहा कि यात्रा से विकास की उम्मीद है। राज्यपाल अजय कुमार

भल्ला ने कहा कि अवैध प्रवास पर रोक लगानी होगी।

लेकिन विषय ने आलोचना की। कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे ने इसे टोकनिज्म कहा। प्रियंका गांधी वाड़ा ने कहा कि दो साल देर से आए। तेजस्वी यादव ने भी यही बात कही। वे कहते हैं कि 260 मौतों के बाद अब आना अपमान है। कुछ संगठनों ने यात्रा को दिखावा दिया।

यह दिखाता है कि हर तरफ अलग नजरिया है। कुछ को उम्मीद है, कुछ को शिकायत। क्या सरकार सबकी सुन रही है? दोनों समुदायों से बातचीत हो रही है, यह अच्छा संकेत। लेकिन आलोचना से सीखना चाहिए। अगर सभी पक्ष शामिल हों तो शांति आएगी। सोचिए, अगर तनाव खत्म हो तो मणिपुर कितना आगे बढ़ सकता है।

आगे की राह: सुलह और स्थिरता की चुनौती

यह यात्रा मणिपुर के लिए नई शुरुआत हो सकती है। मोदी ने शांति वार्ता का जिक्र किया। सरकार विस्थापितों को घर लौटाने में मदद करेगी। उत्तर-पूर्व की स्थिरता पूरे भारत के लिए जरूरी। अगर मणिपुर शांत हो तो व्यापार, पर्यटन बढ़ेगा। जातीय सुलह से समाज मजबूत बनेगा। लेकिन चुनौतियां हैं। अवैध प्रवास, जमीन के झगड़े। सरकार को इन पर काम करना होगा।

यात्रा से संदेश गया कि केंद्र ध्यान दे रहा है। लेकिन क्या यह लगातार रहेगा? एक यात्रा से सब नहीं बदलता। निरंतर प्रयास चाहिए। भारतीय पाठकों के लिए यह सोचने का मौका है कि उत्तर-पूर्व को कितना महत्व देते हैं हम। अगर विकास हो तो देश मजबूत बनेगा। लेकिन शांति बिना विकास अधूरा। क्या हम सब मिलकर योगदान दे सकते हैं? यह विचार मन में रखिए।

संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन पर ऐतिहासिक प्रस्ताव भारत समेत 142 देशों का समर्थन



@ सुमित शुक्ला

न्यूयॉर्क में शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक अहम प्रस्ताव पारित किया। यह प्रस्ताव फिलिस्तीन समस्या के शांतिपूर्ण समाधान और द्विराज्य सिद्धांत को मजबूत करने से जुड़ा था। न्यूयॉर्क घोषणापत्र नाम से आए इस प्रस्ताव के पक्ष में 142 देशों ने मतदान किया, जिनमें भारत भी शामिल रहा। 10 देशों ने इसका विरोध किया, जबकि 12 देशों ने मतदान से दूरी बनाई।

भारत ने इस दौरान साफ़ कहा कि उसका रुख हमेशा से यही रहा है कि एक संप्रभु, स्वतंत्र और व्यवहार्य फिलिस्तीन राज्य बने, जो मान्यता प्राप्त सीमाओं के भीतर एक सुरक्षित इजराइल के साथ शांति और सुरक्षा से रह सके। यह संदेश भारत के पुराने रुख की ही पुनरावृत्ति था, जिससे साफ़ हो गया कि नई दिल्ली संतुलन बनाए रखना चाहती है।

मंत्रों की घोषणा और फ्रांस-सऊदी की पहल

इस मतदान के बाद फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैट्रों ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट लिखी। उन्होंने कहा कि फ्रांस और सऊदी अरब की पहल से आज 142

देशों ने न्यूयॉर्क घोषणापत्र को स्वीकार किया है। मैट्रों ने इसे मध्य पूर्व में शांति की दिशा में एक अपरिवर्तनीय कदम बताया। मैट्रों ने लिखा, “आज हम सब मिलकर एक ऐसा सम्झौता बना रहे हैं जो आने वाले समय में इजराइल और फिलिस्तीन के बीच शांति कायम करने में मदद करेगा। दो लोग, दो राज्य, जो शांति और सुरक्षा के साथ कंधे से कंधा मिलाकर रहेंगे यही हमारा साझा लक्ष्य है।”

फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने यह भी स्पष्ट किया कि फ्रांस, सऊदी अरब और उनके सहयोगी इस योजना को केवल कागजों पर नहीं छोड़ेंगे। वे आने वाले दिनों में न्यूयॉर्क में होने वाले द्विराज्य समाधान सम्मेलन में सक्रिय भागीदारी करेंगे।

सितंबर में होने वाला उच्च-स्तरीय सम्मेलन

मैट्रों ने कुछ दिन पहले ही यह जानकारी दी थी कि 22 सितंबर को न्यूयॉर्क में इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष के समाधान पर एक उच्च-स्तरीय सम्मेलन होगा। इसमें फ्रांस और सऊदी अरब सह-अध्यक्ष की भूमिका निभाएंगे। इसका मकसद क्षेत्र में शांति और सुरक्षा के लिए वैश्वक समर्थन जुटाना है। यह सम्मेलन ऐसे समय पर आयोजित किया जा रहा है जब इजराइल और फिलिस्तीन के बीच हिंसा और तनाव बार-बार बढ़ते दिखते हैं। हाल ही में

गाजा और वेस्ट बैंक में हुई झड़पों और इजराइली एयर स्ट्राइक्स ने एक बार फिर हालात को गंभीर बना दिया था। इसी पृष्ठभूमि में यह सम्मेलन उम्मीदों की किरण के रूप में देखा जा रहा है।

अमेरिका से मंत्रों की अपील

इस प्रस्ताव और सम्मेलन के बीच एक और बड़ा विवाद सामने आया। अमेरिका ने फिलिस्तीनी अधिकारियों को वीजा देने से इनकार कर दिया। इसे लेकर मैट्रों ने कड़ा एतराज जताया और इस फैसले को अस्वीकार्य बताया। उन्होंने कहा, “फिलिस्तीनी प्रतिनिधित्व बेहद ज़रूरी है।

यह मेजबान देश समझौते का हिस्सा है और सम्मेलन की सफलता के लिए भी आवश्यक है। अमेरिका को अपने इस फैसले को वापस लेना चाहिए।” मैट्रों ने इस दौरान सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस से हुई अपनी बातचीत का भी ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि दोनों देश मिलकर न्यूयॉर्क में सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे और कोशिश करेंगे कि अधिक से अधिक देश इसमें शामिल हों।

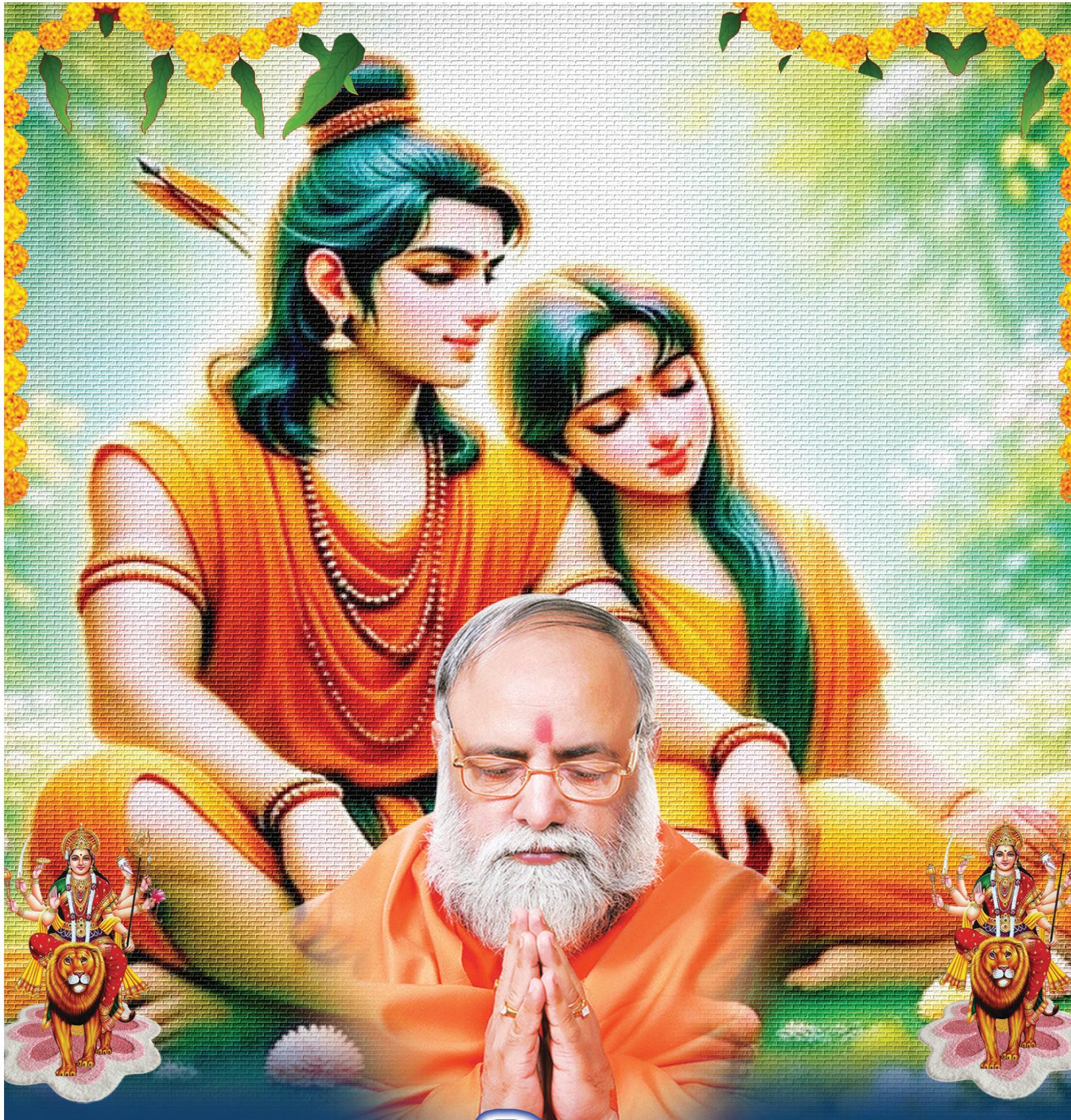
भारत का संतुलित रुख

भारत ने हमेशा से मध्य पूर्व की राजनीति में संतुलन

साधने की कोशिश की है। इजराइल के साथ भारत के मजबूत कूटनीतिक और रक्षा संबंध हैं, वहीं फिलिस्तीन की स्वतंत्रता और उसके अधिकारों का समर्थन भी करता रहा है। इस प्रस्ताव में भारत का समर्थन दिखाता है कि नई दिल्ली अब भी द्विराज्य समाधान को ही एकमात्र टिकाऊ रास्ता मानती है। भारत की नज़र से देखें तो यह न सिर्फ़ कूटनीतिक संतुलन का मामला है बल्कि एक ऐसा रुख है जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी छवि भी मजबूत होती है।

शांति की ओर एक फ़दम

संयुक्त राष्ट्र महासभा का यह प्रस्ताव बाध्यकारी नहीं है, लेकिन इसका नैतिक और राजनीतिक महत्व बहुत बड़ा है। जब 140 से अधिक देश किसी एक रास्ते पर सहमति जाते हैं, तो यह संदेश देता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय शांति की दिशा में एकजुट है। फ्रांस और सऊदी अरब की कोशिशों से उम्मीद की जा रही है कि आने वाले हफ्तों में इस मुद्दे पर ठोस कदम उठाए जाएंगे। सबसे अहम होगा यह देखना कि अमेरिका जैसी महाशक्ति अपने रुख में बदलाव लाती है या नहीं। न्यूयॉर्क घोषणापत्र के समर्थन में भारी बहुमत से पारित यह प्रस्ताव दुनिया के सामने एक नई उम्मीद पेश करता है।



प्रभु कृपा दुर्घट निवारण समाप्ति

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



ULTIMATE HAIR SOLUTION

NO

ARTIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :